# कुमारों का आह्वान

**जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती थी बसेरा,**
**वह भारत देश है मेरा.....**
**जहाँ हर बालक एक मोहन था और हर बाला एक राधा,**
**क्या बचा अभी वो आधा या आधे की भी बाधा...?**

जो भरा नहीं है घावों से, बहती जिसमें रसदार नहीं,
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसे मातृभूमि से प्यार नहीं।

जहाँ शेर गाय एक जगह पानी पीते थे, आज वहाँ पर मानव कैसे जीते हैं...! क्या वर्तमान समय अपने भारत का इतिहास पढ़ने के बाद और आज की तस्वीर देखकर आपके मन में कुछ भी नहीं होता? कहाँ गई आपकी शुभ भावनायें, टूटे घरों, उजड़े बसेरों को देखकर आपको कैसे चैन की नींद आती है? रोते-बिलखते बच्चों के हाथों में एक टूटा कटोरा पकड़े देखते हुए मुँह फेर कर निकल जाने के बाद भी आपके मन में कोई करुणा की आवाज नहीं गूँजती? गुब्बारे खेलने की उम्र में, गुब्बारे बेचते बच्चे, हाथ में स्कूल बैग पकड़ने की जगह टाट की बोरी पकड़े, स्कूल जाने की उम्र में दिसम्बर-जनवरी की ठण्ड में भी एक कमीज पहन कर नंगे पैर घूमते हुए प्लास्टिक बीनते बच्चे, जब लोग रजाई में मुँह छिपाकर लेटे हुए होते, उस ठिठुरती सर्दी में वो बच्चे सुबह-सुबह अपने काम के स्थान कूड़ों के ढेर पर ऐसे बैठे होते हैं जैसे मानो सोफे पर बैठे हों। तो क्या कभी आपने अपने देश के ऐसे नौनिहालों की हालत नहीं देखी या देख कर भी आप अपना फर्ज नहीं समझते, कभी सोचा कि ऐसी हालत क्यों हुई? कभी आप ने सड़क पर चलते बीमार पशुओं को देखा है? हमने देखा है, कहो तो एक-दो दर्दनाक दृश्यों से आपको अवगत करायें। कई पशुओं का मुँह ही सड़ गया जिससे उन्हें भूख प्यास लगते हुए भी कुछ खा-पी नहीं सकते, कईयों का पिछला अंग सड़ा हुआ देख जिसका वह कोई इलाज नहीं कर सकते यह सब देखकर कभी आपने सोचा कि आखिर इनको इतनी सजा क्यों, इन्हों को अगर कहें कि अपने विकर्मों की सजा मिल रही है तो इन्हें विकारी बनाने के निमित्त कौन? क्या इन्हें देख कर आपके मन में अभी भी कोई रहम की भावना उत्पन्न नहीं होती? कितने निरपराध लोगों को रोज सजा मिलती है, कितने मौत के घाट उतार दिये जाते हैं, क्या अपराध करने वालों के प्रति आपके मन में करुणा नहीं आती कि आखिर वह इतना पाप बढ़ायेंगे तो उनकी सजा कितनी होगी। क्या बहनों-माताओं के ऊपर अत्याचार की कहानी आपको कभी नहीं सुनाई पड़ती? क्या गरीबों की बेबसी का आप पर कुछ असर नहीं होता? क्या भूख से बिलखते लोगों की हालत पर आपको कभी तरस नहीं आता? भ्रष्टाचार के बढ़ते प्रकोप की लहर कभी आपको सोचने पर मजबूर नहीं करती, प्रकृति के ताँडव नृत्य से विनाश को कभी आपने नहीं देखा? सुरसा के मुँह जैसी बढ़ती महंगाई के बारे में आपने कभी नहीं सोचा? बदलती सरकारों, बदलते नियम कानूनों, बढ़ते धार्मिक उन्मादों से आपके दिल में कुछ भी हलचल नहीं आती? क्या विज्ञान के विनाशकारी रूप से आप बिल्कुल परिचित नहीं है? क्या फुटपाथ पर पड़े अनाथों की लम्बी लाइन देखकर आपका दिल कभी नहीं पिघलता? अरे! आपके गर्म खून में उबाल कब आयेगा? जब समय हाथ से निकल जायेगा तब? इसलिए उठो, छोड़ो झूठी आजादी, बढ़ती आबादी, बेरोजगारी के बारे में कुछ तो सोचो? आखिर कब तक इनसे मुँह फेरते रहोगे, कब तक सोते रहोगे, कब तक अपने फर्ज से हटते रहोगे... आखिर कब तक आपको अपनी जिम्मेवारियों की समझ आयेगी, कब तक आँख बन्द कर बैठे रहोगे। अरे! उठो, और कुछ कर दिखाने के लिए बीमार मानसिकता को दूर भगाओ,

मजबूरियों का लबादा उतार फेंको और टूट पड़ो दुश्मन पर आखिर कब तक चुपचाप हथियार डाल यूँ ही हाथ पर हाथ धरे बैठे रहोगे? मरना भी है तो कुछ करके मरो, मरने के पहले दुश्मन को अवश्य मारो, निकलो बाहर। देखो आसमान की ओर वह जो सबसे छोटा तारा चमक रहा है उसका प्रकाश भले अन्धेरा दूर कर पाये या न कर पाये परन्तु अन्धेरे से भयभीत होकर अपने कर्तव्य को नहीं छोड़ रहा है। देखो उस चींटी की ओर जो अपने से 50 गुना अधिक भार उठा कर चल रही है और अथक होकर निरन्तर अपने कर्म में प्रयासरत है। देखो एडीसन को जिसने बल्ब का आविष्कार 6000 बार असफलता प्राप्त करने के बाद भी कर्म को नहीं छोड़ा और एक दिन सफल रहे। और देखो उस छोटी सी चिन्गारी को जिसने अपने ही दम पर जंगल को जलाकर खाक कर दिया। अरे! तुम क्या नहीं कर सकते! कोई एक छोटा-सा पत्थर कितने भी बड़े तालाब में फेंक कर देख लो उसके फेंकने से उठी लहर तालाब के किनारे वाले पानी को प्रभावित किये बिना नहीं रहती। तो तुम क्या नहीं कर सकते! क्योंकि तुम तो चैतन्य तारे हो, तुम अज्ञान के अंधकार में भटक रहे जग को रोशन क्यों नहीं कर सकते, तुम तो चींटी समान प्राणी से कितने विवेकवान हो, तुम्हारे में अद्म्य शक्ति है, तुम तो पहाड़ को भी अपनी संकल्प शक्ति से हटा सकते हो और तुम चिंगारी नहीं ज्वाला हो और तुम्हारे साथ हजारों सूर्यों से भी प्रचण्ड स्वयं सर्वशक्तिवान भगवान है। इसलिए तुम्हारी कभी असफलता हो ही नहीं सकती क्योंकि तुम्हें सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है। अंग्रेजों की गुलामी से भारत माँ को आजाद कराने के लिए जब एक राजनेता बापू गांधी ने आह्वान किया तो कितने लोग अपना सबकुछ छोड़ कूद पड़े आजादी के क्षेत्र में बिना आगे पीछे सोचे, कितने अरबपति उनकी एक आवाज पर पद-पोजीशन छोड़कर मलिन बस्ती में उनके साथ सेवा करने को तैयार हो गये, कितने लोग शानो-शौकत का जीवन जीने वाले विदेशी सामान की होली जलाकर अपने हाथ से निर्मित स्वदेशी चीजें अपना कर बड़ा गर्व करते थे, कितनी बहनों ने अपने जेवर उतार कर सर्वस्व गहने गांधी जी के हाथ में लाकर रखे और भगवान तो तुम्हें यह कुछ भी नहीं करने को कहता और ही सफेद फरिश्तों जैसी पोशाक पहनाता है, क्या विश्व कल्याण करने हेतु विश्व पिता का आह्वान स्वीकार नहीं? आखिर कब परिवर्तन शुरू करोगे? एक क्रांतिकारी के कहने पर कितने युवाओं ने हंसते-हंसते फांसी का फंदा चुन लिया और कितनी यातनायें सहीं, पर संगठन व देश के लिए गद्दारी नहीं की।

भगतसिंह को रात-रात भर नींद नहीं आती थी, रोते थे कि कब भारत माँ को गुलामों की बेड़ियों से मुक्त करा पायेंगे, क्या आप अपने पाप खत्म करने के लिए ऐसे सोचते हो? भारत को रावण की जंजीरों से छुड़ाने के लिए आपकी नींद फिटती है? उस 200 वर्ष की गुलामी से मुक्त होने में 90 वर्ष लग गये। जबकि इतने जोशोखरोश से अनेकों ने अपने जान की बाजी लगा दी थी। वो दुश्मन तो बाहर के थे, ये विकारी दुश्मन तो हमारे मन के भीतर तक अपना अधिपत्य जमा चुके हैं। और 2500 वर्षों से डेरा जमाये हुए है, इतनी धीमी गति से स्व को तथा सर्व को कैसे मुक्त करा पाओगे? एक महात्मा के आह्वान पर विवेकानन्द ने अपना सबकुछ छोड़ दर-दर की ठोकरें खाईं, पर वेदों का डंका सारे विश्व में बजाकर रामकृष्ण परमहंस का नाम संसार में अमर कर दिया। तुम्हें तो भगवान आह्वान कर रहा है, साथ दे रहा है और तुम्हारे आस-पास भी, भगवान आ चुका है, यह नहीं प्रत्यक्ष कर पाये? अरे! तुम्हें तो सर्वशक्तिमान का साथ है तो तुम क्या नहीं कर सकते। एक विकलांग बच्चा समुद्र का खारी चैनल पार कर सकता, एक साधारण बहन माउण्ट एवरेस्ट पर चढ़ सकती है और तुम महावीर विघ्न-विनाशक अचल, अडोल अंगद का टाइटिल लेकर भी चुप बैठे हो? एक शिवाजी के कहने पर भारत को आजाद कराने के लिए बन्दा वैरागी, आग की सलाखों से हंसते-हंसते

शरीर छलनी करवा देता है, उसके बच्चे का दिल निकाल कर उसके मुँह में जबरदस्ती ठूंसा जाता है, आँखे निकलवा देता है पर दुश्मनों के आगे घुटने नहीं टेकता, तुम्हें तो कोई सजा नहीं मिलने वाली, भगवान रक्षक सदा साथ है फिर तुम माया के आगे बार-बार क्यों घुटने टेक देते हो? क्यों मरी हुई माया, वह भी कागजी शेर आप को इतना भयभीत कर रही है जो उसके पास जाने वा हाथ लगाने की हिम्मत नहीं करते?

आई.सी.एस. की परीक्षा देने के बाद जब लंदन के एक अधिकारी ने नौकरी के लिए ऑफर किया तो सुभाषचन्द्र बोस ने कहा हम अपने देश की सेवा करेंगे तो उसने कहा कि तुम खाओगे क्या? तो उन्होंने कहा कि मेरा पेट 2 आने से भर जायेगा और दो आने तो हम किसी तरह कमा ही लेंगे तो भला तुम अपना पेट भरने के पीछे इतनी लालसा को क्यों पालकर चल रहे हो? क्या तुम्हें भगवान व उसकी बात पर विश्वास नहीं है, जो अपने वर्तमान-भविष्य के बारे में ही सोच-सोच अपनी सारी शक्तियाँ वेस्ट कर रहे हो? भगवान तो तुम्हारी गैरन्टी लेता है। जबकि एक सिद्धार्थ, एक बीमार व्यक्ति, मुर्दे को देख कर महात्मा बुद्ध बन जाता है और आपके दिल को परिवर्तन करने के लिए और कितने दर्दियों भरे अस्पताल, कितने भूकम्प और सुनामी जैसे प्रकृति के कहर चाहिए? आखिर किस दिन के इन्तजार में हैं किसके इन्तजार में है कि वो आकर परिवर्तन कर देगा?

भगवान का आह्वान, दुनिया की बेबसी, समय की पुकार, प्रकृति की चेतावनी, माया की चुनौती आप को ललकार रही है और तुम क्या सोच रहे हो? छोड़ो मान, अभिमान, धनवान, बेईमान, अपमान, अनुमान के धन्धे...। अरे! उठो, और याद करो अपने स्वमान को जो भगवान ने तुम्हें दिया। भगवान तुम्हें क्या बनाने आया है और तुम कहाँ लगे हो? निकाल फेंको अपने अन्दर से बुजदिली, दिलशिकस्ती की बीमारी, उठो हाथ उठाकर संसार से कह दो, अब दु:ख के दिन बीत चुके, अब स्वर्णिम सुखों की दुनिया हमसे ज्यादा दूर नहीं, कह दो रावण को बांध ले अपना बोरी-बिस्तर अब वह हमसे बच नहीं सकता।

मेरे प्रिय युवा भाइयो, एक छोटी-सी कुल्हाडी से एक युवक किसी बड़े से बड़े पेड़ को धराशायी कर देता है वह ताकत उस कुल्हाड़ी की नहीं, बल्कि युवक की होती है, व्यक्ति एक हथौड़ी से किसी भी बड़ी से बड़ी दीवार को मलियामेट कर सकता है वह ताकत हथौड़ी की नहीं, उसकी होती है जिसने बिना रूके उसे चलाने की हिम्मत रखी, तुम्हारे में भी रावण को ध्वस्त करने की, विकारों के विकराल पेड़ को काटकर गिराने की अथाह शक्ति है। आज सारे संसार की नजरें तुम पर ही टिकी हैं, छोटे और बड़ों दोनों का विश्वास तुम पर ही है।

इसलिए उठो! जागो और जगाओ अपनी सुषुप्त शक्तियों को। मेरे भाइयो तुम शक्ति का अवतार हो, प्यारे के बाबा वरदान हो, ब्राह्मण परिवार का श्रृंगार हो, अरमान हो, हिम्मत का आगाज हो, मेहनत का आवाज हो, उमंग-उत्साह का भण्डार हो, दृढ़ता का पहाड़ हो... इसलिए उठो और कूद पड़ो इस मैदान-ए-जंग के महासमर में, निश्चित विजय तुम्हारी हुई पड़ी है। माया बस, अब मरी पड़ी है, कल्प-कल्प का अनुभव है यह, भगवान तुम्हारा साथ दे रहा है। बस, अब तुम्हें माया से डरना नहीं है, क्रोध के आगे झुकना नहीं, कभी विघ्नों के कारण रूकना नहीं, लोगों के कहने से बहकना नहीं, दिलशिकस्ती से बदलना नहीं, मर्यादा के पथ से भटकना नहीं, तुम्हें बस अब आगे, आगे और आगे बढ़ना ही है, मंजिल को पकड़ना ही है। जग परिवर्तन करना ही है, सबको सन्देश पहुँचाना ही है। तुम्हें सबको सुखी बनाना ही है, प्रभु पिता का यही है सन्देश, यही आदेश, यही है गुरू का उपदेश, हो तुम्हारा यही परिवेश। ओमशान्ति।

# कुमारों की प्रतिज्ञा

**प्रा**णप्यारे अव्यक्त बापदादा आज हम अपने सौ प्रतिशत मन से समस्त ब्राह्मण परिवार के सामने आप से यह प्रतिज्ञा करते हैं कि माया, रावण से भी विकराल रूप रखकर क्यों न आ जाये, विघ्न व समस्यायें हिमालय से भी बड़ी क्यों न आ जायें, सगे-सम्बन्धी सुनामी से भी बड़ा तूफान क्यों न खड़ा कर दें, कर्म भोग चीन की दीवार जैसी बाधा क्यों न बन जाये परन्तु हम अपनी पवित्रता रूपी अनमोल निधि को किसी भी हालत में हिलने नहीं देंगे। बल्कि इस पवित्रता की खुशबू से सारे विश्व को सुंगधित कर पाक बना देंगे।

आपने हमें अपने आश्रय में लेकर हमारे जीवन को आश्रम से जोड़ ऋषि कुमार बना दिया। अब इस जीवन को तपस्या की अग्नि द्वारा सनत कुमार बनाकर सारे जहान को रावण के चंगूल से मुक्त करवा देंगे, स्वतंत्र बना कर ही छोड़ेंगे, मर जायेंगे, मिट जायेंगे पर हम आपसे वादा करते हैं कि जब तक इस कार्य को पूरा नहीं कर लेते तब तक चैन से नहीं बैठेंगे।

आज हम आपके सामने यह भी प्रण कर रहे हैं कि आज के बाद काम, क्रोध, कुटिल, कठोरता, कुमार्ग, कुविचार, कुदृष्टि, कुकर्म वाली जीवन की ओर संकल्प की दृष्टि भी नहीं करेंगे। क्योंकि यह जीवन आज से आपकी अमानत है। आज से इसका स्वामित्व एकमेव आप को ही है, आप इसे जहाँ चाहें, जब चाहें, जैसे चाहें यूज करें। इसका एक अंश भी हम आपकी श्रीमत बिना कहीं भी नहीं लगायेंगे। साथ-साथ विकारी-व्यसनी, विलासी-आलसी, मनमौजी जीवन त्याग कर तपस्वी जीवन बनाकर सदा संगठन में रह एक मत, सदा सहयोगी, एकव्रता होकर रहेंगे।

बाबा! आपके उपकारों का एहसान हम इस जन्म में तो क्या, हजार जन्म लेकर भी नहीं चुका पायेंगे, पर आपके फरमान को ईमानदारी और वफादारी से पूरा करने का वचन देते हैं। जब तक पूरा नहीं करेंगे तब तक हमारे लिए आराम हराम है। आपका दिया हुआ कार्य ही अब हमारा लक्ष्य, उद्देश्य, मंजिल, स्वप्न जीवन हो गया है, इसके लिए हमें कुछ भी सहन करना पड़े, त्यागना पड़े तो हम मरने के लिए खुशी-खुशी तैयार हैं।

इस अश्वमेध यज्ञ की रक्षा करने के लिए हमें चाहे ध्रुव की तरह तपस्या करनी पड़े या मीरा की तरह जहर का प्याला पीना पड़े या सीता की तरह अग्नि परीक्षा देनी पड़े तो भी हम हँसते-हँसते कैसी भी परीक्षायें आये उसमें पास ही नहीं बल्कि पास विद ऑनर होके ही दिखायेंगे।

हम तुम्हें देंगे क्या बाबा, हम कहाँ देने के काबिल,
ये तुम्हारी ही इनायत, जो किया इतना मुकम्मिल।
और हम चाहे नहीं कुछ, और है हमको न पाना,
एक बस दिल में रहो तुम.तुमको अपना प्राण माना।

ओम्शान्ति

ओम्शान्ति

# कुमारो की विशेषतायें

जब सारी सृष्टि तमोप्रधान भ्रष्टाचारी, जड़जड़ीभूत अवस्था को प्राप्त कर चुकी होती है तब जगत नियन्ता, नवयुग रचता, विश्व विधाता, सद्गति दाता, सर्वशक्तिवान, परम कल्याणकारी त्रिकालदर्शी परमपिता परमात्मा कल्प के अन्त में सृष्टि को सम्पूर्ण परिवर्तन कर श्रेष्ठाचारी, सतोप्रधान बनाने हेतु इस विश्व धरा के रंगमच पर अवतरित होते हैं उस समय अगम अगोचर, निराकार परमात्मा को पहचानना बहुत ही मुश्किल होता है। जब तक वह अपना यथार्थ परिचय न बताये तब तक तो नामंमुकिन ही होता है और बताने पर भी सब नहीं पहचान पाते। बड़े-बड़े साइंसदान अपने सूक्ष्म से सूक्ष्म अति सूक्ष्मदर्शी यन्त्रों से जिसे नहीं देख सके, बड़े-बड़े विद्वान अपनी दूरदर्शी बुद्धि से भी जिसे न जान सके एवं महान से महान ऋषि-मुनि अपनी चमत्कारिक दृष्टि से भी जिसे पहचान न सके, जिनके लिए भक्ति में लोगों ने कितने व्रत, जप, तप, तीर्थ, सन्यास आदि किया। गला काटने को भी तैयार थे और अब उस प्रभु प्रियवर को न सिर्फ आप ने जाना, पहचाना परन्तु आपने उसको माना और उसकी श्रीमत मानकर उसके ही हो गये। ऐसे समय पर आपको बाबा से मिली परख शक्ति व विवेक शक्ति का कमाल है ऐसे श्रेष्ठ आत्माओं का हार्दिक स्वागत।

इस कलियुगी पतित तमोप्रधान सृष्टि में जहाँ माया का एक छत्र राज्य हो, ऐसे समय आपने उसे चैलेंज कर सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत लिया, जिसे देख कर सन्यासी भी हैरान रह गये, आपकी इस वीरता को हम सलाम करते हैं।

पुराने भ्रष्टाचारी संसार, जिसमें चारों ओर विकारों का ही बोल-बाला हो, उस घोर अज्ञान तिमिर के समय में आपने जीवन को संयमी बनाने का बीड़ा उठाया, आपकी बहादुरी के आगे इस दुनिया की महान हस्तियाँ भी नतमस्तक हो गई, आपकी बहादुरी का हम हार्दिक सम्मान करते हैं।

जब परमात्मा पतन हो रहे समाज के परिवर्तन का यज्ञ रचते हैं तो तन-मन-धन से यज्ञ के सुरक्षा कवच बन सबसे आगे आप ही खड़े होते हो। आप जैसे महावीरों का दिल से बार-बार धन्यवाद करते हैं।

इस बन्धनों के जाल वाले संसार में निर्बन्धन, स्वतन्त्र जीवन प्राप्त करने वाले आप ही हो और इस कल्प के अन्त में तमोप्रधान सृष्टि में भी 700 ब्राह्मणों से उत्तम जीवन प्राप्त करने का लक (भाग्य) भी आपको ही प्राप्त है। 100% उमंग-उत्साह से भरपूर, नयी स्फूर्ति से लवरेज़, शक्तिशाली जीवन का आनन्द आप ही लेने वाले हो। दुनिया भर के बोझों की जिम्मेवारियों से मुक्त सालिम बुद्धि वाली जीवन, सदा समर्थ श्रेष्ठ हिम्मतवान अनमोल जीवन प्राप्त करने वाले लक्की कुमारों को लाखों-लाख बधाई हो, बधाई हो।

नित नये उमंग-उत्साह के साथ सेवाओं की गति को तीव्रता से अंतिम सोपान तक पहुँचाने के प्रयासरत आप अथक सेवाधारियों का हार्दिक अभिनंदन।

संसार में जब साधनों की अंधी दौड़ चल रही हो, माया अपना रॉयल रूप रच कर सबको अपना मुरीद बना रही हो, सोने का हिरन बनकर प्रचलित बड़े-बड़े नामीग्रामी सन्यासियों को भी ठग रही हो, और

आप ने उसके हर रूप को पहचान कर उससे मुक्त रह, त्यागी जीवन अपनाया जिसकी हम तहेदिल से प्रसंशा एवं सराहना करते हैं।

इस विनाशी साधनों से भरी चकाधौंध की मायावी नगरी में जब सब पर माया का जादू सिर चढ़ कर बोल रहा हो, टी.वी., फिल्मों की संक्रामक महामारी जब सबको अपने चपेट में ले रही हो, उस समय आपने साधना का कवच धारण कर न सिर्फ स्वयं को सेफ किया बल्कि अन्यात्माओं को भी इस महामारी से बचाने के लिए बीसों नाखुनों का जोर जी-जान से लगाने की इस हिम्मत को हम धन्यवाद करते हैं।

सृष्टि की गर्दन को जब रावण के आगोश का फंदा पूरा ही कस चुका हो, चकराने वाली चकाचौंध से जब छोटा-बड़ा हर व्यक्ति चकित हो रहा हो, उस समय आपने तपस्या के बल पर, साधना के चरम बिन्दू पर पहुँच कर वैराग्य की बुलन्दियों पर अडिग रहने वाले, उस महामानव सृष्टि के आदि पुरुष, प्रजापिता को अपना आदर्श मानकर, वैराग्यवान जीवन का पथ चुनकर इस कलियुगी संसार में न सिर्फ युवा जीवन का विकल्प खोजा, बल्कि तपस्वी जीवन अपना कर भटकती युवा पीढ़ी को जीवन जीने की नई दिशा दर्शायी। इस अज्ञान अन्धकार सृष्टि में विकारों की भूल-भूलैया में आप दीपक की भांति दैदीप्यमान हो जग को रोशन कर रहे हो। आपके इस प्रखर निर्णय व अटूट निश्चय की मुक्त कंठ से सराहना करते हैं।

जब धरती पर विकार हरेक की रग-रग में व्यापक हो चुका हो, उस विकारी वायुमण्डल को अपदस्थ करके आपने सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत धारण कर उसके प्रभाव को दुनिया के सामने खुशी से चमकते चेहरे से अवगत कराया व अब भी करा रहे हो, जिससे बड़े-बड़े साइंसदान अपनी विचारधारा बदलने पर विवश हो गये। ऐसे असम्भव को सम्भव कर दिखाने वाले वन्डरफुल महानात्माओं, राजऋषियों, तपस्वी कुमारों का सम्मान करते हुए हमें गर्व हो रहा है। आपका जीवन प्रेरणीय, अनुकरणीय है। हमारी हार्दिक शुभ भावना है कि बाबा आपकी बुद्धि को सदा माया से बचाये, श्रेष्ठ बनाये रखे। कभी भी माया की नजर न लगे। आपकी लौकिक-अलौकिक जीवन सदा स्वस्थ एवं लम्बी हो। सदा भगवान की छत्रछाया में पलते, माया रावण से सुरक्षित रहो। सदा खुश रहो, मुस्कराते रहो, संगठित होकर सदा सेवा करते रहो, सदा अविनाशी कमाई करते रहो। दिन दूनी रात सौगुनी, यूँ ही उन्नति करते रहो। दिव्य गुणों की खूशबू फैलाते रहो। सदा सुखी रहो सबको सुखी करो।

मन में दृढ़ निश्चय इतना हो, हर मुश्किल पीछे हट जाये,
पुरुषार्थ में इतना दम खम हो, मंजिल भी खुद पे शरमाये।।

ओम्शान्ति

प्रिय आत्मन्,

आपको भगवान ने ढूँढा और तुमने फिर से अपना हाथ उससे छुड़ा दिया। क्या तुमने उसे पहचाना नहीं कि यही हमारा पिता है, परमात्मा आत्मा का पिता तो वह किसी के शरीर में तो आयेगा ही बिना शरीर के वह नॉलेजफुल कैसे आकर नॉलेज दिया होगा, बिना दिये तो नॉलेजफुल कहलायेगा नहीं। आखिर किस समय दिया होगा? आपको अगर अभी तक यह बात समझ में नहीं आयी तो आप दूसरों को क्या समझाते थे अगर आई थी तो क्लास में आना क्यों छोड़ दिया, पढ़ाई क्यों छोड़ी? पढ़ाई छोड़ी माना शिवबाबा का हाथ छोड़ा? क्या हुआ जो आप दूसरों को पार लगाने की बातें बताते थे और आज खुद ही डूबने की राह पकड़ ली? तकदीरवान बनते-बनते बदनसीब क्यों बनने चल दिये। कल तक आप अपने लक्ष्य व पुरुषार्थ के बारे में व सेवाओं के बारे में क्या-क्या बातें करते थे और आज आपको क्या हुआ जो खुद ही भटक गये? मेरे भाई क्या सन्देश देने का कार्य पूरा हो गया है या सतयुग आ गया है? या दुनिया से अवगुणों का सफाया हो गया है विश्व नव-निर्माण का कार्य पूरा हो गया है जो अपने आराम करने की सोच लिया है। क्या सिर्फ आप अब स्वार्थ के लिए जीना चाहेंगे या सिर्फ परिवार के लिए ही जीने का मकसद बना लिए हैं?

आप सारे संसार को मदद कर सकते हो फिर एक निम्न हद की सीमा क्यों बना रखी, आप इतना कर सकते हैं जिससे लाखों का भला हो सकता है फिर आप पीछे क्यों हट रहे हो? क्या दुनिया के दु:ख-दर्द सब समाप्त हो गये हैं या आपको किसी के दु:ख दिखाई नहीं देते या आपको किसी की भावनायें फील नहीं होती? या आपकी सारी शक्ति समाप्त हो गयी है या आपमें दिलशिकस्ती आ गयी हैं या समय की पुकार आपको सुनाई नहीं देती या माया में इतनी शक्ति आ गई है जो आप जैसे दृढ़ निश्चयी, अति आत्म-विश्वासी, प्रबल पुरुषार्थी हिम्मतवानों का भी रास्ता चट्टानों की तरह रोककर आपको अपने चम्बे में फंसा लिया है। कमाल है माया की कि जिसको दुनिया न पहचान सकी उस भगवान को जिसने परख लिया, पहचान लिया और माया ने ऐसा रूप बनाया कि उसको नहीं पहचान पाये। भैय्या माया रावण दुश्मन के रूप में नहीं साधू के रूप में आती है, सोने के हिरन के रूप में आती है क्या आपकी परख शक्ति इतनी ढीली हो गयी है? मेरे भाई आपने भगवान को किस लिए छोड़ा भगवान ने तो कभी परिवार, पढ़ाई, नौकरी छोड़ने के लिए कहा नहीं बैलेंस रखने के लिए ही कहा है। क्या आपने अधिक धन कमाने के लिए, या किसी के डर से या किसी से नाराज होकर या फिर माया से दोस्ती कर ली है या विकारी जीवन जीने की इच्छा करने लगे हो?

भैया पैसा बहुत कुछ है पर सबकुछ नहीं, और भगतसिंह, गांधी जी, सुभाष, तिलक ये सब धन के पीछे भागते तो भारत इस हालत में होता क्या? या पैसे सर्व सुख देता तो राजा भर्तहरि, गोपीचन्द, सिद्धार्थ (महात्मा बुद्ध) अपना राज्य न छोड़ा होता, मेरे भाई भगवान इन सबसे बहुत बड़ा है और आपका जन्म इतने छोटे उद्येश्य के लिए नहीं हुआ है तुम अपनी तो क्या लाखों की जीवन नैया पार लगा सकते हो। तुम कहाँ फंस गये हो, और क्यों उलझ कर और फंसते जा रहे हो तुम्हारी मंजिल ये नहीं, तुम्हारा लक्ष्य इतना छोटा क्यों? तुमने इतनी जल्दी घुटने क्यों टेक दिये? तुम सर्वशक्तिवान की

सन्तान मा. सर्व शक्तिवान हो, तुममें अदम्य शक्ति है तुम्हें तो अभी बहुत विकराल बहुत विशाल परिस्थितियों का सामना करना होगा, और तुम तो छोटी-छोटी सी बातों से इतना घबरा गये कि पढ़ाई ही छोड़ दी। अरे सोचो तुमने कौन सी पढ़ाई छोड़ी है? परीक्षायें तो सभी पढ़ाई में होती हैं क्या तुम परीक्षा से घबराने वाले स्टूडेन्ट हो? नहीं, तुम एक बहादुर सैनिक हो जो युद्ध से भी नहीं घबराते, तो परीक्षा उसके आगे क्या है?

हमने एक बार पढ़ा था कि चींटी हाथी को मार देती है पर आश्चर्य कहाँ हाथी कहाँ चींटी, अगर हाथी सिर्फ उसके ऊपर पैर ही रख दे तो चींटी का कुछ भी पता नहीं लगेगा। पर शायद हाथी यह कोशिश ही नहीं करता, कहीं आप भी तो ऐसा ही नहीं कर रहे हैं? अरे भैया भगवान के मिलने के बाद भी आपकी ऐसी ही हालत रही तो दुनिया का क्या होगा? अगर आज आपने कुछ नहीं किया तो आखिर कब करोगे? जब भ्रष्टाचार, पाप, अनैतिकता लाइलाज हो चुका होगा, नहीं तुम इतने स्वार्थी नहीं हो सकते जो सिर्फ अपने लिए सोचो, तुम्हें दूसरों को जीवन देते व जीवन बनाने के लिए जीना है पैसे से जीवन नहीं बनता। ब्रह्मा बाबा, दादी प्रकाशमणी, दादी जानकी, दादी गुल्जार, जगदीश भाई पैसे से नहीं बने थे न ही मदर टेरेसा, गांधी जी, सुभाष, विवेकानंद, भगतसिंह आदि लोग पैसे से बनाये जा सकते हैं। अगर हमारे पास अभी समय भगवान के लिए नहीं है तो आगे चल कर भगवान के पास हमारे लिए समय नहीं होगा तब तक उसको बहुत मिल चुके होंगे, देखो उसने आपको ढूँढा और आप उसका हाथ छोड़ कर किसी और के बन गये, क्या भगवान से शक्तिशाली उससे ज्यादा मददगार रहमदिल, स्नेह का सागर, वफादार, ईमानदार आपको कोई और मिल गया है?

अभी भगवान ऑफर कर रहा है और आप किस सोच में हैं? क्या भगवान का बनने से आपका कोई नुकसान हो गया है या आपको कोई संशय आ गया है या किसी के कोई बात हो गयी है तो भैया मेरे ये आपका घर है आपके पिता का घर है आप खुले हृदय से अपनी बात कर सकते हो, दूसरा सभी पुरुषार्थी हैं सभी में कमियाँ हैं किसी से कोई गल्ती हो गयी तो उसे छोटा समझ माफ कर देने में ही हम सबकी भलाई है और आप लोग ज्यादा समझदार हैं इसलिए किसी भी छोटी बात के पीछे अपने अनमोल समय व अनमोल कमाई को क्यों गँवायें?

आप की बहन होने के कारण यह हमारा कर्तव्य है कि हम आप का भला चाहें, इसलिए हमने आपको यह पत्र लिखा, हमारा आपसे नम्र निवेदन है कि आप सब कुछ भूल, अपना वर्सा न पढ़ाई व पुरुषार्थ करने के लिए एक बार पुन: पधारे, आपका अपने घर में सदा स्वागत है। अगर कोई हमसे गल्ती हुई हो जो आपको फील हुआ जिस कारण आपने पढ़ाई छोड़ी तो उसके लिए हम आपसे माफी मांगते हैं हमें क्षमा कर दीजिएगा, भगवान से वर्सा लेने में हमने आपके सामने बाधा खड़ी की भगवान शायद हमें कभी माफ नहीं करेगा पर आप हमारी अल्पज्ञता पर जरुर रहम करेंगे और पुन: आप नये उमंग-उत्साह से पुरुषार्थ में तत्पर होंगे ऐसी हमें आपसे आशा व पूर्ण विश्वास है कि आप अपना भाग्य श्रेष्ठ बनायेंगे। परिवार में आपसे सभी को बहुत ही उम्मीदें हैं निश्चय ही आप सबकी उम्मीदों को पूरा करने के लिए फिर से शिवबाबा का हाथ पकड़ेंगे। आपके आने का हम सबको इन्तजार हैं।

तूफाँ आये तो आने दो, कोई कहे रूको तो कहने दो,
रूक जाना तेरा काम नहीं, झुक जाना तेरा काम नहीं,
जब तक मंजिल न मिल जाये, धरती पर स्वर्ग उतर आये,
तुझको करना आराम नहीं, तुझको करना आराम नहीं,

इंसान आज है खतरे में इंसानियत भी खतरे में,
भारत ही नहीं मेरे भाई, सारा संसार है खतरे में,
होशियार खतरे से खाली, कोई यहाँ मुकांम नहीं
तूफां आये तो....

हे युवकों निद्रा से जागो, दुर्व्यसन बुराई को त्यागो,
सोने का मृग मायावी है तृष्णा के पीछे मत भागो,
नव-जीवन व नये खून को, मुफ्त करो बदनाम नहीं।
तूफाँ आये तो आने दो...

युग शिल्पियों संसार की सूरत को ऐसे संसार दो,
जिन्दगी हो खुशनुमः और प्यार ही बस प्यार हो,
श्वाँसों को अपनी सफल करो, कहीं हो जीवन की शाम नहीं,
तूफां आये तो आने दो...

*ईश्वरीय सेवा में,*
*आपकी शुभकांछी बहन*
*बी.के.सुमन*

जरा सोचो मेरे भाई, भगवान को ऋषियों ने कितना ढूँढा कितना तप-त्याग किया पर नहीं मिला और आपको घर बैठे मिला तो समझो उसकी वैल्यू को, मत ठुकराओ उसके प्यार व ज्ञान को, वर्से को, नहीं तो बाद में बहुत पछताना पड़ेगा, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। समझ लो इशारा शुभ कार्य में देरी नहीं करें व अब नहीं तो कभी नहीं।

# युवाओं का आह्वान

मेरे प्रिय युवा भाईयों स्वस्थ तन, स्वच्छ मन, अपार ऊर्जा, विराट इरादे, नवीन विचार धारायें, अदम्य साहस, प्रबल पुरूषार्थ की ललक, दृष्टि में लक्ष्य की चमक, बेजोड़ प्रतिभा लेकर भी आप क्या कर रहे हो? क्या संसार से दुख दर्द सब खत्म हो गया है? या आपको दिखाई नहीं देता या देखकर भी अनदेखा कर रहे हो या माया की चकाचौंध आपको अपने चंगुल में फसां रही है? मेरे युवा भाईयों सब कुछ तो आपके पास है बुलंद हौसले, सितारों को छूने की तमन्ना, आसमान पर चढ़ने का इरादा, हवाओं को दिशा देने की ताकत, तूफानों का रूख मोड़ देने का साहस, खतरों से खेलने की हिम्मत, सागर की थाह लेने का जज्बा, मंजिल को प्राप्त करने की अटूट लगन, कुछ कर दिखाने का जजबा, कठोर श्रम, मर मिटने का व कुछ कर गुजरने का जुनून क्या ये सब एक युवा के अलावा किसी और से संभव हुआ या हो सकता है?

मेरे भाईयों ये सब स्वर्णिम अवसर मात्र कुछ वर्षो के ही होते हैं और उसमें आपको वह सब सम्भव कर दिखाना है जो अब सबके लिए असंभव लगने लगा है परन्तु स्वर्ण को सोना भी कहा जाता है। दिनों दिन हालात बिगड़ते जा रहे हैं और तुम लोग या तो सोने (Gold) को प्राप्त करने की प्रक्रिया में लगे हो या फिर सोने (Sleep) में लगे हो। मेरे भाईयों आप यहाँ तक पहुँच कर जब तुम्हारे पास अपार ऊर्जा, निर्मल मन, जाग्रत विवेक, भगवान की मदद, समाज की अपेक्षाएं, परिस्थितियों का प्रकोप एवं चेतावनी, समय की मांग, परिवार का सहयोग सामने है, तब तुम इस चौराहे तक आकर ठहर क्यों गये हो? चन्द्रशेखर आजाद से जब उनके मित्रों ने कई बार उनके बूढ़े माँ बाप का पता पूछा ताकि उन्हें कुछ मदद के लिए हर मास रूपये भेज दें तो आजाद ने वे रूपये इस आश्वासन के साथ ले लिए कि वह खुद ही भेज देगें पर कुछ दिनों के बाद भी रूपये न भेजने का कारण विद्यार्थी ने जब उनसे पूछा तो उन्होंने बड़ी भावना से कहा कि मेरे देश में जितने भी वृद्ध हैं वे सब मेरे माता पिता हैं उन्हें सुखी व स्वतंत्र करना न सिर्फ मेरी जिम्मेवारी है बल्कि मेरा फर्ज है और यह रूपये उसी कार्य में खर्च हो गये हैं। ऐसी थी क्रान्तिकारियों की सेवा भावना उन्होनें अपने को किसी हद में नहीं बांधा, सारा देश अपना है जो भी करना है, सारे देश के हित को ध्यान में रखकर करना है और आप लोग जिन्हें बेहद के पिता से बेहद विश्व परिवार का ज्ञान मिला फिर भी सिर्फ अपने भविष्य के बारे में सोच–सोच कर अपनी सारी शक्तियाँ लगा रहे हो। जब रामकृष्ण परमहंस जी ने विवेकानन्द का आह्वान किया तो उनके सामने उनकी माँ व उनसे छोटे भाई बहन थे जिनके जीवन निर्वाह की जिम्मेवारी उन्हीं के ऊपर थी। उनके सामने दोनों ही रास्ते अनिवार्य लग रहे थे पर निर्णय एक तरफ का ही हो सकता था। इसलिए असमंजस में वे तीन दिन तक दुखी रहे फिर बड़ी दृढ़ता के साथ अपनी संकुचित मानसिकता पर विजय प्राप्त कर लिया और निकल पड़े विश्व विजयी अभियान पर। उन्होनें सोचा कि अगर मैंने घर में रहकर इनकी जिम्मेवारी ली तो जिन्दगी भर में सिर्फ इनका ही कल्याण कर पाउंगा।

दूसरी बात अगर भूख के कारण इन तीन लोगों ने शरीर भी छोड़ दिया तो हमारे देश की ऐसी हालत है जहॉ गुलामी, बेकारी व सामाजिक कुरीतियों से न जाने कितने लोग रोज मर रहे हैं। मुझे भारत की सेवा के लिए ही निकलना उचित हैं और वे निकल पड़े पारिवारिक व मानसिक बन्धनों को तोड़ कर। क्या तुम्हें अपनी जिम्मेवारियों का कोई एहसास नही? क्या तुम्हें इस मिट जाने वाली दुनिया से इतना मोह हो गया है जो हाथ पर हाथ रखकर बैठ गये हो। क्या तुम्हें भारत माँ की गुलामी का कोई फिक्र नहीं? अरे भाई सोने की चिड़िया भारत का ऐसा हाल देखकर भी तुम्हें कोई संकल्प नहीं उठता? चन्द्रशेखर आजाद देश सेवा के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार

थे तो क्या तुम अपनी छोटी–छोटी इच्छाओं के पीछे ही घूमते रहोगे? या पारिवारिक जिम्मेवारियों का बहाना करके अपने आपको ही ठगते रहोगे। 2500 वर्ष से माया रावण की गुलामी से भारत माँ की आँखों में जरा देखो क्या दृश्य सामने हैं? देखो जहाँ तक तुम देख सकते हो – बीमार, गरीब, विकलाँग, लाचार, दुखी, हताश निराश, जिन्दगी से परेशान बेबस लोग, अपनों के सताये, अस्पतालों की बढ़ती भीड़ क्या इन्हें देखकर आपको कुछ भी नहीं हो रहा, क्या इन्हें ऐसी चिन्तित हालत में छोड़कर आप भाग सकते हो? क्या आपके मजबूत कंधे इनका बोझ नहीं उठा सकते?

अब जरा दूसरा दृश्य देखों – बेबस गरीब बच्चे खाने–खेलने की उम्र में खाना बनाते, बर्तन धोते, खाना खिलाते, चाय की दुकानों पर, अमीर घरों में कैद, उनकी कोठी की शान बढ़ाते बच्चे, फुट पाथों एवं स्टेशनों पर बोतलें बीनते बच्चे, फटी बोरियां ओढ़कर माँ की ओट में दुबक कर बैठे बच्चे, अपने सोने के देश भारत में फटेहाल नौनिहालों की पैबंद लगी जिन्दगी पर क्या आपको कोई तरस नहीं आता? अरे मेरे भाई कुछ तो सोचो कुछ तो करो इन मासूम धरोहर को बचाने के लिए।

अब तीसरा दृश्य देखो, इन नव जवानों को जिनको अपनी ही खबर नहीं, अपना ही होश नहीं क्या करने चले थे, क्या करने लगे हैं। कहाँ जाना था, कहाँ जा रहे हैं? क्या करना चाहिये था? क्या कर रहे है? कुछ पता नहीं। माँ बाप की गाढ़ी कमाई का पैसा नशे में उड़ाकर बर्बाद कर रहे, न सिर्फ पैसा बर्बाद कर रहे हैं पर खत्म कर रहे हैं अपना अनमोल जीवन जो बहुतों की बहुत मेहनत के बाद इस मुकाम तक पहुँच पाया था लेकिन वे इसमें आग फैला रहे हैं, समाज में बुराईयों का कहर दे रहे हैं, बीमारियों का घुन घोल रहे हैं वायुमण्डल में पतन का जहर बढ़ा रहे हैं, अपराधियों की भीड़ पैदा कर रहे हैं, हैवानियत का आतंक, कर रहे हैं, दिलों में दहशत, हर मन में कपट शुरू कर रहे हैं, इंसानियत मानवता की विनाश लीला बढ़ा रहे हैं नित नये दंगा फसाद। मेरे भाईयों इस महामारी को कौन रोकेगा? क्या तुम्हें इनकी मूर्खता व बेबसी पर रहम नहीं आता? आखिर आप क्या सोच रहे हो? कहीं ये सब देखकर तुम भी तो दिलशिकस्त नहीं हो रहे हो। नहीं, अभी वो समय नहीं कि आप जैसे लोग भी ध ाराशायी हो जायें।

अभी चौथा दृश्य देखो ये वो नजारा है जिनको देखकर संसार चलता था, दूसरों का विवेक जाग्रत करने वाले आज अपने विवेक को भौतिकता की चकाचौंध में आकर क्षणिक सुख साधनों पर गिरवी रख समाज व अपने आपको धोखे में डालकर भारत माँ को कलंकित कर रहे हैं। एक तरफ राजनीति दूसरी तरफ धर्मनीति अब दोनों ही सिद्धान्तहीन हो लक्ष्य के बिना ही चल रहे हैं जिसके कारण बढ़ती मारामारी, भ्रष्टाचार, चुनावी दंगल के कारण बढ़ती मंहगाई, शासन सत्ता की लालसा की आग अब ये राष्ट्रव्यापी समस्या हो गयी है। नित नई बनती सरकारें, बदलते कानून, क्या इस विकराल समस्या का समाधान आपके सिवाए है किसी के पास? पर आपने कभी इस फैलती आग पर पानी छिड़कने के लिए सोचा? मेरे भाई क्या ये समस्त मानवता के दुख दर्द आपको दिखाई नहीं देते या दिखाई देने के बावजूद किसी की करूण दुर्दशा पर आपकी मनोदशा हलचल में नहीं आती? आखिर आपके फौलादी बाजुओं में जोश कब आयेगा? आपका गर्म खून दिनों दिन ठंडा क्यों होता जा रहा है? या आप अभी कुछ और देखना चाहते हैं? आपको मानवता की चीत्कार, माया की चुनौती, प्रकृति की चेतावनी दिखाई व सुनाई क्यों नहीं पड़ती? आप जैसे प्रबल पुरूषार्थी, अति आत्म–विश्वासी दृढ़ निश्चयी, हिम्मतवानों का रास्ता चट्टानों की तरह रोककर कहीं माया अपने चम्बे में तो नहीं फँसा रही? भाईयों माया रावण दुश्मन के रूप में नहीं साधु के रूप में आता है। सोने के हिरन के रूप में माया आती है। क्या आपकी परख शक्ति इतनी ढीली हो गयी है। भाईयों अगर आपकी बुद्धि सांसारिक बातों में लगने लगी है या धन के पीछे आकर रूक गये हो तो मेरे भाई ये पैसा बहुत कुछ है पर सब कुछ नहीं। अगर भगत सिंह, सुभाषचन्द्र बोस, गाँधी जी, बाल गंगाधर तिलक ये सब धन के पीछे भागते तो भारत आज इस हालत में होता क्या?

या पैसा सब सुख देता तो राजा भृतहरि, राजा गोपीचन्द, सिद्धार्थ (महात्मा बुद्ध) ने अपना राज्य न छोड़ा होता, मेरे भाईयो आपका जन्म इतने छोटे उद्देश्य के लिए नहीं हुआ है। तुम लाखों करोड़ों मनुष्यों की जीवन नैया पार लगा सकते हों, पर तुम कहाँ फँसते जा रहे हो और क्यों उलझकर और उलझते जा रहे हो? तुम्हारी मंजिल ये नहीं। तुम्हारा लक्ष्य इतना छोटा क्यों? तुम इतनी जल्दी घुटने क्यों टेकने लगते हो? तुम सर्वशक्तिवान की सन्तान मास्टर सर्वशक्तिवान हो। तुम अपार ऊर्जा के धनी हो तुम्हें तो आगे बहुत विकराल परिस्थितियों का सामना करना होगा। तुम एक बहादुर सैनिक हो, भगवान ने तुम पर विश्वास किया है। तुम इतनी जल्दी इतनी छोटी–छोटी परिस्थितियों में क्यों घबरा जाते हो? सैनिक तो युद्ध से नहीं घबराता। तो फिर छोटी छोटी परीक्षायें भला क्या हैं? हमने एक बार पढ़ा था कि चींटी हाथी को मार देती है पर आश्चर्य कहाँ हाथी कहाँ चीटीं, अगर हाथी सिर्फ उसके ऊपर अपना पैर ही रख दे तो चींटी का कुछ भी अता पता नहीं लगेगा। पर शायद हाथी यह कोशिश ही नहीं करता, कहीं आप भी तो ऐसा नहीं कर रहे हो? भगवान के बच्चे होकर भी अगर आप ऐसे ही निश्चिन्त व आराम पसन्द रहे तो दुनिया का क्या होगा? अगर अभी आपने कुछ नहीं किया तो ये स्वर्णिम अवसर आपके हाथ से निकल जायेगा और आप फिर करेगें कब? जब भ्रष्टाचार, अनैतिकता लाइलाज हो चुका होगा क्या तब करोगे? नहीं तुम इतने स्वार्थी नहीं हो सकते जो सिर्फ अपने लिए सोचों, तुम्हें तो दूसरों को जीवन दान देते, जीवन बनाने के लिए जीना है, पैसे से जीवन नहीं बनता। ब्रह्मा बाबा, दादी प्रकाशमणि, दादी जानकी, दादी गुलजार, जगदीश भाई जी जैसे लोग पैसे से नहीं बने न ही मदर टेरेसा, गाँधी, विवेकानंद, चन्द्रशेखर आजाद पैसे से बनाये जा सकते हैं। मेरे भाइयों अभी भगवान आपको आफर कर रहा हैं, समय भी आपके इन्तजार में खड़ा हैं। लोगों की नजर आप पर ही है फिर क्यों चुपचाप शान्त बैठे हो, उठकर खड़े हो जाओं और तोड़ दो समाज की जंजीरों को, मन के बन्धनों को फेंक दो आलस्य अलबेलेपन की चादर को और ठान लो अपने मन में कि जब तक संसार से दु.ख दर्द की छुट्टी न की तब तक चैन से नहीं बैठेगें। किसी भी बुराई का अंश दुनिया के किसी भी कोने में जब तक रहेगा तब तक ये युद्ध जारी रहेगा। भ्रष्टाचार व विकारों का जब तक अंत नहीं तब तक पुरुषार्थ जारी रहेगा। भाइयों दुनिया को आपमें स्वर्णिम भविष्य नजर आ रहा है। भगवान ने भी आप पर ही भरोसा किया है इसलिए यह कार्य सिर्फ और सिर्फ तुम्हें ही करना होगा। इसलिए उठो, जागो, अपने आत्मविश्वास को जगाओ, अपने व्यर्थ विचारों व नाउम्मीदी के कारोबार को उठा लो अपने अनंत ऊर्जा के गाण्डीव को पहन लो समर्थ संकल्पों के कवच को और कूद पड़ो इस महासमर में बढ़ाओ हिम्मत का कदम छोड़ो अपनी अटूट लगन के तीर, आपके मनोबल रूपी गदा का वार खाली नहीं जायेगा। तुम चिन्ता मत करो, सारथी बनकर सर्वशक्तिमान निरन्तर तुम्हारा साथ दे रहा है। तुम बस उसकी श्रीमत रूपी शरण में रहो। अरे! कुछ ऐसा करो जो करने योग्य हो, समझने योग्य हो, अंधेरे के भय से डरकर सूरज कब तक नहीं निकलता? उसके निकलते ही अंधेरा कैसे भागता है यह आपको नहीं पता क्या? इसी प्रकार तुम जरा उठकर खड़े तो हो रास्ता अपने आप बनता चला जायेगा। बस तुम किंकर्त्तव्यविमूढ़ मत होना, रूकना नहीं, ठहरना नहीं, पीछे की ओर मुड़ना नहीं, दिलशिकस्त हो हारना नहीं, तुम्हें बस विजयी ही बनना है। तुम्हें अभिमन्यु नहीं अर्जुन बनना है, जटायु नहीं, हनुमान बनना है, अश्वत्थामा नहीं अंगद बनना है। विजय तुम्हारे से बचकर कहीं जा ही नहीं सकती। विजय तुम्हारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।

नहीं शेर कभी ढूँढ़ा करते, पद चिन्हों में अपने पथ को,
जाबाँज नहीं मांगा करते कभी किसी की रहमत को ।

हे युवा भाइयों निकाल फेंको अपनी कमजोर मानसिकता को, असफलता की कालिमा को और जगाओ अपने जिन्दादिली के सूर्य को। माया आपका कुछ नहीं कर सकती, विजय आपसे तब तक दूर नहीं जा सकती जब तक कि आपके इरादों में दम हैं विचारों में उमंग है, भावनाओं में भलाई है, दिल में करूणा है, दया है, जीवन में सच्चाई है। ये काम तुम्हारा है तुम्हें करना ही होगा और तुम ही कर सकते हो। 2500 वर्ष माया की चोट खाते खाते मानवता लहूलुहान हो चुकी है, इस पर मुक्ति का मरहम लगाना अब न सिर्फ तुम्हारा फर्ज है बल्कि अन्तिम लक्ष्य होना चाहिए। इन लाचार बच्चों को, बेबस व्यसनी युवा पीढ़ी को, असमर्थ व वृद्धों को, बेजुबान प्राणियों को, विकलांग राजनीति, धारणाओं विहीन धर्म–निर्दयी आतंकवादियों को, असहाय आत्माओं को, गरीब बीमारों को, आखिर कौन बनेगा इनका सहारा? कौन करेगा इनका परिवर्तन? कौन बनेगा इनका पथप्रदर्शक, आखिर क्या होगा इनकी कर्म कहानी का? अब कोई भी महात्मा, धर्मात्मा व पुण्यात्मा नहीं सुधार सकता, अब तो सिर्फ परमात्मा ही इनका सहारा बन सकता है और बदल सकते हो तुम इनकी जीवन कहानी को बन सकते हो तुम इनके रहनुमा, दिखा सकते हो इन्हें मंजिल, आखिर तुम्हें किसका इन्तजार है, तुम्हारे सिवा अब इनका कोई मसीहा बनने वाला नहीं आखिर तुम क्यों सोच रहे हो? और क्या सोच रहे हो? तुम क्यों किसी की प्रतीक्षा कर रहे हो? अरे और कौन आयेगा जो यह आपका कार्य करेगा। यह कार्य बिना तुम्हारे संभव ही नहीं। इसलिए उठो और बढाओं अपने मजबूत हाथ और थाम लो उन्हें जो निरीह व कातर नजर से तुम्हारे इन्तजार में है और बुलन्द आवाज में कह दो इस जहान से कि अब हम जग गये हैं और बता दो उन्हें जो लगभग निष्प्राण हो चुके है कि तुम चिन्ता मत करो अब हममें स्फूर्ति आ गयी है और सचेत कर दो माया को कि अब बहुत हो चुका तुम्हारा आतंक, अब तुम्हारी खैर नहीं। अब तुम्हें जाना ही होगा क्योंकि अब हम संभल चुके हैं और याद आ गई है हमें हमारी शक्तियाँ और हमारा साथ दे रहा है स्वयं सर्वशक्तिमान परमात्मा, अब तुम्हारे धोखे में कोई आ नहीं सकता क्योंकि अब हमारी तीसरी आँख खोल दी है भगवान ने। तुम्हें क्या तुम्हारे पूरे वंश को अंश सहित खत्म करके ही हम चैन लेंगे। मेरे युवा भाइयों जगत जननी के ऋण से मुक्त होने का यही समय है और यही वह समय है जब आप यह कार्य संभव कर सकते हो, सिर्फ अपने मनोबल को किसी भी हालत में कमजोर मत होने देना, धीरज कभी नहीं छोड़ना, उत्साह कभी ठंडा नहीं हो, साहस कभी टूटे नहीं आत्मविश्वास कभी खोना नहीं, हौसलें कभी शिथिल नहीं करना, उमंग कभी कम न हो, मन कभी मुझांना नहीं, बस ये कार्य हुआ ही पड़ा हैं। तुमने ये कार्य अनेक बार किया है, एक बात और जिसने भी समाज के लिए कुछ किया या कोई बड़ी क्रान्ति लानी हुई तो उसमें उसको अपना इन्द्रिय सुख व स्वार्थ छोड़ना पड़ा है, बिना इस त्याग के कुछ भी विशाल कार्य नहीं हो सकता और सामाजिक चेतना क्रान्ति तब तक नहीं संभव जब तक कि आध्यात्मिक क्रान्ति का बिगुल नहीं बजायेगें। छल, दम्भ और पाखण्ड समाप्त हो जायेगा जब नैतिकता के बल से उसका सामना करते हैं। इसलिए अपने निजी स्वार्थ व सुखों का त्याग कर तपोबल व मनोबल के द्वारा सुखमय संसार बनाना यही एक मंजिल, यही एक लगन जो आपको अग्नि रूप में प्रखर रखनी है। मेरे भाइयों हम सबको आप पर सिर्फ आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है व हम सबको इन्तजार है कि आप इस पुनीत कार्य का बीड़ा अवश्य उठायेगें न सिर्फ आप बीड़ा उठायेगें बल्कि इस कार्य को पूरा करना होगा और आप इस कार्य को अवश्य पूरा करेगें। ओमशान्ति।

ब्रह्माकुमारी सुमन बहन,
अलीगंज,लखनऊ।

# सर्वश्रेष्ठ एवं सर्व महान धोबी – शिव बाबा

समय का पहिया जब वायुमण्डल के धरातल पर घूमता है तब हवा के साथ धूल कण एवं प्रकृति की मलीनता सभी चीजों को धूमिल कर जाती है और पुनः उसकी चमक बिखेरने के लिए हमें करने पड़ते हैं अनेक उपक्रम। पहले तो हर कर्म करने के लिए एक वर्ग निर्धारित था जिससे समाज में हर व्यक्ति की वैल्यु थी और हर व्यक्ति का समाज में सहयोग व लिंक था एक दूसरे के सहयोग के कारण आपसी प्रेम प्यार बहुत था। कोई हमें अनाज देता था, कोई सब्जी, कोई बाल काटता था, कोई कपड़े धोकर देता था, हम यह भी देख सकते थे कि जिसका जो कार्य था वह अपने काम को बड़े मनोयोग के साथ समय से करके देता था जिससे सब कार्य सहज व सही ढंग से हो जाते थे। दूसरा व्यक्ति वही काम कितना भी कोशिश से करता पर ठीक नहीं हो पाता था। ऐसे ही एक कार्य है धोबी का कार्य। पहले जमाने में लोग धोबी से कपड़े धुलवाते थे। धोबी लोग बहुत मेहनत से कपड़े धुलते थे। हमारे गंदे कपड़ों को धोबी लोग रेहू (एक प्रकार की सोडियम युक्त मिट्टी) में लपेट कर दो दिन रखकर फिर मसाला डालकर आग की भट्ठी पर चढ़ाते थे फिर नदी या तालाब के पास ले जाकर दिसम्बर–जनवरी की कड़कती ठंड में भी वह पानी में खड़े होकर लकड़ी या पत्थर के पट्टे पर पीट–पीट कर वह कपड़े धोते थे और बदले में मिलता था उनको थोड़ा सा अनाज लेकिन सुखी दोनों लोग रहते थे। परन्तु समय बदला, मानसिकता बदली और बदल गयी सारी पुरानी गतिविधियाँ, कार्यप्रणाली। आज विज्ञान के युग में हर कार्य विज्ञान के माध्यम से होता है जिसमें समय की बचत और कार्य में सफाई भी रहती है। इसी श्रृंखला में आज कपड़े धुलाई में भी विज्ञान ने आमूल चूल परिवर्तन कर दिया है। विज्ञान ने कपड़े धुलाई के लिए अच्छे से अच्छा सहज से सहज एक से बढ़कर एक साधन अर्थात मशीनें दे दी हैं जिसमें गंदे से गंदा कपड़ा भी कम से कम समय में व बिना कोई मेहनत के ही अच्छा धुल जाता है जिससे धोबियों की रोजी रोटी का सवाल उठ खड़ा हो गया है। दुनिया की हर एक चीज पर विज्ञान का वर्चस्व कायम हो चुका है। हर एक चीज को साफ करने का या नवीनीकरण करने का भिन्न–भिन्न तरीका होता है किन्तु मनुष्य ने विज्ञान के माध्यम से सभी को आखिरकार साफ करने का उपाय ढूँढ़ ही लिया है। परन्तु जिसको साफ करना अति आवश्यक है उसकी तरफ एक तो मनुष्य का ध्यान ही नहीं गया या जाता है, वह है निज आत्मा। अगर ध्यान गया भी तो साफ करने का उपाय उसे आता ही नहीं। विज्ञान का कोई भी साधन उसको साफ ही नहीं कर सकता। हाँ कुछ लोग ये समझते हैं कि इसे धोना अति आवश्यक है और धोते भी हैं पर हर चीज को एक ही तरीके से नहीं साफ किया जा सकता। जैसे कपड़ों को साफ करने के लिए पानी का उपयोग होता है। कुछ कपड़े वा लोहा, कैरोसीन व पेट्रोल से साफ होते है। किन्तु सोने को अग्नि ही साफ कर सकती है। स्थूल चीजों को स्थूल साधनों से साफ किया जा सकता है व साफ करते भी हैं परन्तु आत्मा रूपी सूक्ष्म सत्ता को साफ करने में पानी असमर्थ है उसका आत्मा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और ना ही कोई स्थूल और सूक्ष्म सत्ता उस पर कोई प्रभाव डाल सकती है परन्तु आज तक लोग आत्मा को भी स्थूल चीजों से साफ करने का यत्न करते आ रहे हैं किन्तु वह साफ तो हुई नहीं और ही मैली होती गयी।

पूरे 5000 वर्ष के समय चक्र में 84 पुनर्जन्म पूरे करते करते आत्मा जब पूर्ण रूप से गंदी हो जाती है जब वह मलिन एवं चमकविहीन हो जाती है तब सिर्फ परमपिता परमात्मा शिव ही उसको पुनः साफ सुन्दर एवं चमकदार बनाते हैं। जब सभी मनुष्य आत्मायें, महात्माओं,

ओमशान्ति

# मधुबन – एक मोस्ट वन्डरफुल लैण्ड

जिस धरा को स्वयं भगवान ने तलाशा हो जगत नियन्ता एवं जग निर्माता ने जिस स्थान को चुना हो, जानीजाननहार ने जिस भूमि को पसन्द किया हो, भाग्य विधाता ने जिसको संवारा हो, विश्वकर्मा ने जिसे तराशा हो, जिस बाग को स्वयं सर्वशक्तिवान बागवान ने सजाया हो, जिस धरनी के कण-कण को प्रेम के सागर के पवित्र प्रेम ने सींचा हो जिस के पेड़ पौधों को स्वयं आदि पिता ब्रह्मा ने अपने कमल हस्तों से लगाया हो जिसके फूलों में रूहों के रहनुमा ने रूहानियत की सुगन्ध भरी हो, जिसमें सर्वश्रेष्ठ रचनाकार ने अपनी मधुरिमा के रंग भरे हो, जिस बगिया को स्वयं सृष्टि के मालिक ने अपनी नजरों से निहाल किया हो, पवित्रता के सागर ने जिसकी प्रकृति में पावनता के प्रकम्पन भरे हो, जिसकी हवाओं में शीतलता के सागर ने शीतल लहरे भरी हो, जिसके पंछियों ने स्वयं मुरलीधर की मुरली सुन चहचहाना सीखा हो, जिसकी सुन्दरता में शुभभावनाओं का बल भरा हो, जिस वायुमण्डल में खुद खुदा ने बैठ सबको तपस्या कराई हो और आदि पिता आदम ने खुद बैठकर जहां तपस्या की हो, जिस बाग को वरदाता ने स्वयं बसाया हो, जिसे जगत के सर्व श्रेष्ठ माली ने पाला हो, जिस उपवन को स्नेह के समन्दर ने स्वयं सींचा हो वह विधाता की अनमोल रचना है – **मधुबन।**

बाग बगीचा वन उपवन तो दुनियां में लाखों होंगे पर मधुबन जैसा तपोवन कहीं नहीं हेागा। इस तपोवन की खुशबू हर आने वाले के सर्व तनाव, दबाव से दूर कर खुशनुमा जीवन जीने का उत्साह पैदा करता है। जिन्दगी के चन्द रोज हर साल हमें भी इसकी शीतल छत्रछाया में जीने के लिए मिलते हैं। जिसकी ऊर्जा पूरे वर्ष कार्य करती है। मधुबन के कुछ अनमोल अनुभव व अति उत्तम नज़ारे जो हमारी नजर में छपे, वह हम सबसे शेयर करना चाहेंगे -

**1. धरती का स्वर्ग -** धरती का स्वर्ग कश्मीर को जिसने भी कहा था उसने मधुबन नहीं देखा था, दूसरा कश्मीर में मात्र प्राकृतिक सुन्दरता है जो नयनों को क्षणिक सुख प्रदान करती है पर मधुबन की तो हर बात निराली है यह तन-मन, दिल-दिमाग, वर्तमान, भविष्य, सभी को आराम व सुख प्रदान करने वाली है। मन वांछित फल प्रदान करने वाला है। प्राकृतिक दृष्टिकोण से भी देखिये नैसर्गिक सुन्दरता, अरावली की सुरम्य श्रृंखलायें, शान्त वादियां, वेदों में वर्णित अनेक मन्दिर व गुफायें, पुराणों वर्णित अनेंक यादगारें, विश्व प्रसिद्ध अनूठी कलाकृति का अनुपम उपहार देलवाड़ा मन्दिर, शुद्ध पवित्र शीतल पवन, प्रदूषण मुक्त वायुमण्डल, प्रकृति की सुन्दरता में चार चांद लगाती नक्की झील जो राजस्थान में गर्मी के दिनों में आंखों को ठंडक का एहसास कराती है, ईमानदार व मेहनती लोग यहां की उन्नति में अपना अलग ही स्थान रखते हैं। प्रकृति की निराली छटा हर मन को सहज ही मोह लेती है। छोटा बड़ा, अमीर-गरीब कोई भी हो, इसकी सुन्दरता ने उसको अपना मुरीद न बनाया हो ऐसा हो ही नहीं सकता। आखिर डायरेक्टर (निर्माता) अपने लिए सर्वश्रेष्ठ स्थल ही चयनित करेगा ना।

**2. तपस्या कुण्ड -** कहीं कोई एक महापुरूष तप करता है तो उसका प्रभाव सदियों तक मानव के मन को परिवर्तन करने में सहायक होता है ऐसा लोगों का मानना है। लोगों की भावनाओं को परिवर्तन वह स्थान हजारों साल तक करता रहता है एवं वह स्थान तीर्थस्थल कहलाने लगता है और उसकी रज कण को लोग कुछ इस भाव से अपने मस्तक पर लगाते हैं कि हमारी आत्मा शुद्ध होगी, शक्तिशाली होगी इतनी वैल्यु

तपस्या की होती है। पर यहां की तो बात ही निराली है यहां एक नही, दो नही, सैकड़ों लोग एक साथ बैठकर दिन रात तपस्या रत हैं। यहां की एक बात हम बताना चाहेंगे, कहते हैं कि विश्वनाथ के मन्दिर में दीपक कभी भी बुझता नहीं है आखिर वह किसका यादगार है। साकार बाबा को कभी किसी ने सोते नहीं देखा और आज भी वहाँ 24 घंटे कोई न कोई आत्म दीप जाग्रत किये ही होता है। शाम को शान्ति स्तम्भ की योग साधना स्वर्ग की सभा से भी सुन्दर लगती है। सैकड़ों लोग कतार बद्ध हो धवल वस्त्रो से सुसज्जित दो घंटे ध्यान साधना का पावरफुल प्रकम्पन फैलाते है जो ना सिर्फ मन को शक्ति प्रदान करता है बल्कि जीवन जीने का मकसद भी पता चलता है। नयनाभिराम दृश्य का अवलोकन जिस किसी ने भी किया उसके मानस पटल पर यह दृश्य न सिर्फ सदियों तक अमिट रहेगा बल्कि रूह को राहत भी देता रहेगा व प्रेरित करता रहेगा कि हमें भी कुछ करना है बिना परमात्म बल के दुनिया के झमेलों से पार पाना सम्भव ही नहीं। यह पूरा मधुबन ही एक ऐसा तपस्या कुण्ड है, जिसके कण-कण में परमात्म बल की भासना आती है जो न सिर्फ आत्मा को गुण एवं शक्तियों से सजाता है बल्कि कठिन से कठिन संस्कारों का भी सहज परिवर्तन करने में बेजोड़ है और आत्मा पर 2500 वर्षों से लगी विकारों की जंग को उतारने में सक्षम है। हमारी बागवान से एक छोटी सी प्रार्थना है कि एक बार इस तपस्या कुण्ड में हर आत्मा को आने व शुद्ध होने का सुअवसर मिल जाता तो हमें अच्छा लगता।

**3. स्नेह का बहता अनन्त स्रोत** - भगवान को प्यार का सागर कहा जाता है पर प्रभु ने अपनी कर्म स्थली पर स्नेह का अनन्त स्रोत खोल दिया है जिसका हर शख्स स्नेह सम्पन्न हो स्नेह ही लुटाता है। जिसके भी सम्पर्क में जो भी कभी आता है वह ऐसे मिलता है जैसे कई जन्मों का पक्का साथ रहा हो या कोई बड़ा पदासीन हो, लेने की न चाह, न भावना अनवरत स्नेह मूर्त हो बस देते ही रहना हर कोई यहाँ से यही अनुभव करके जाता है। ऐसे स्नेह से, मीठी मुस्कान से बात करते हैं कि बार-बार मिलने का व बात करने का मन करता है। नि:स्वार्थ भावना से हर आत्मा अपनी सेवायें सदा देने के लिए तैयार रहती है। दुनियां में स्नेह करते हैं पर सदा नहीं करते व सबसे नहीं करते पर यहां स्नेह की कोई कंडीशन नहीं, सब सबसे सदा व सब एक दूसरे से अधिक करते हैं। कोई को और कुछ समझ में आया हो या न आया हो पर स्नेह रंग में हर कोई सराबोर होकर ही निकलता है, स्नेह एक ऐसा आवश्यक तत्व है जो जीवन पर्यन्त हरेक चाहता रहता है । जैसे छोटे पेड़ की तरह बड़े पेड़ को रोज पानी की जरूरत भले नहीं रहती पर बरसात के पानी की जरूरत हर पेड़ को रहती है जिसका इन्तजार वह सारा वर्ष करता है। ठीक इसी प्रकार 8 दिन के बच्चे से लेकर 80 साल के वृद्ध को भी स्नेह के शीतल नीर की सदा तलाश रहती है और यहां स्नेह की रिमझिम सदा ही लगी रहती है। जिसकी फुहार तन-मन दोनों को शीतल करती रहती है।

**4. हर विभाग बेजोड़** - हर विभाग अलग-अलग हैं पर हर विभाग स्नेह सिक्त है। कोई कह सकता है कि डिसपेन्सरी भी कोई देखने की चीज है और दुनिया में पेशेन्ट अस्पताल एवं डिस्पेन्सरी जाने से घबराता है पर यहां की डिस्पेन्सरी, दिल को पेशेन्स देने वाली फूलवारी है, उसका वायब्रेशन नीरसता से कोसों दूर खुशनुम: चादर ओढ़े हुए है। डाक्टर्स व नर्सेस का वो अपना पन, दवाई को कुछ इस तरह से देना जैसे कोई उपहार दे रहे हों। पेशेन्ट को बड़े स्नेह से बुलाकर बीमारी के प्रति सचेत करना जैसे कि वह अपने किसी परम हितैषी सम्बन्धी से मिल रहे हो। फोटोकॉपी विभाग ने तो कमाल ही कर दी है जिसने भगवान के स्नेह की पूरी जेरॉक्स कॉपी ही उतार दी है वहाँ हर शख्स विशेष माना जाता है। हर व्यक्ति अपनापन महसूस करता है हर

सुविधा हरेक के लिए सीनियर लोग भी सदा देने के लिए तैयार रहते हैं। अभिमान रिंचक मात्र भी छू नहीं पाया ऐसा लगता है जान न पहचान पर जो भी कुछ खा रहे होंगे इतने प्यार से खिलायेंगे कि ना चाहते हुए भी व्यक्ति सिर झुकाकर ले ही लेगा। साहित्य विभाग, बर्तन विभाग, यातायात विभाग भोजन विभाग, दूध विभाग, टोली विभाग, एकाउन्ट डिपार्टमेन्ट किस किस से क्या नहीं मिला। कोई भोजन करना न भी चाहे तो भी खाले। खाने वाले कौन हैं, कहाँ के हैं कितने रोज खाकर चले जाते हैं पर खिलाने वाले इतने प्यार से खिलाते हैं कि आज कल की माँ क्या खिलायेगी। दूध विभाग - धुलाई विभाग ने जैसे कपड़े धोते-धोते अपनी कमियों की धूल भी धुल ली हो। टोली विभाग को तो दिलखुश विभाग नाम रखना चाहिए, मीठी टोली ने जैसे उनके अन्दर भी मधुरता का रस भर दिया हो। एकाउन्टस डिपार्टमेन्ट की बलिहारी ही कहेंगे जो सीधी साधी साधारण सी भोली-भाली बहनों को भी एक सी. ए. के जितना ही होशियार बना दिया। यह है भगवान की पढ़ाई का कमाल, दुनियां में लोग पैसे लेने के बाद भी ठीक से काम नहीं करते पर यहां पैसे तो क्या थैंक्स की भी चाहना से दूर रहकर दिल से हर व्यक्ति अपनी सेवायें देने में खुशी का इज़हार करता है। साउण्ड विभाग, सिलाई विभाग, जूते-चप्पल विभाग, ओमशान्ति भवन, आर्ट डिपार्टमेंट, बिस्तर विभाग, हर विभाग इतना रमणीकता व दिल से अपने कार्य को करता है। यहां का हरेक विभाग अपने आप में वन्डर है, साहित्य विभाग हर समय हरेक के लिए, हर हित की कामना करता है। दुनियां में तो सिर्फ 7 वन्डर्स दिखाते हैं पर यहां हर चीज हर विभाग वन्डरफुल है। ऐसा मैनेजमेंट और ऐसा स्टॉफ कहीं भी नहीं मिलेगा यह भगवान का सलेक्शन व शोकेश है जिस पर सभी को न सिर्फ नाज है बल्कि हरेक पर भावना के साथ श्रद्धा से सिर झुकाने का मन करता है। कहां मिलेगा ऐसा यूनिक परिवार जिसकी दुनियां में कहीं भी मिसाल नहीं हो सकती, किसी भी विभाग को देखिये जितना सुख व खुशी उस विभाग के काम से नहीं उससे कहीं ज्यादा उस विभाग से मिलने पर मिलती है। काश यह स्नेहमयी कार्य प्रणाली सारी दुनिया में चलने लगे।

**5. अद्भुत मैनेजमेन्ट** - किसी को किसी प्रकार का प्रेशर नहीं, कोई किसी के ऊपर नहीं फिर भी हर कार्य इतनी किफायत व यूनिक तरीके से होता है जिसके बारे में दुनियां के लोग शायद सोच भी नहीं सकते। जैसे एक बार रजिस्ट्रेशन ऑफिस के बारे में एक सूचना - पेपर देख कर एक नये भाई अपने साथी से कहने लगे कि देखिये ये सूचनायें वहां लगाई गयी जहां हम लोग फ्री बैठे होते हैं और सिम्पल पेपर पर प्लास्टिक रखकर सेलोटेप से चिपका दिया, कोई हाथ लगायेगा गंदा नहीं होगा, बारिश के महीने में सीलन से बचा रहेगा, थोड़ा ऊंचाई पर है शरीर से टच नहीं होगा जिससे हरेक तरह से सेफ रहेगा। हम लोग तो ऐसे सोचते ही नहीं हैं। बारिश में कहां क्या बिछाना है क्या ढकना है। क्या बन्द करना है फल वाले पेड़ों को कीड़ों से, वन्य प्राणियों से कैसे बचाना है, गन्दे पानी को Recycling कर पुन: कैसे यूज करना है। क्या दिमाग है, कोई किसी को कुछ कहता नहीं है फिर भी सब काम समय से पहले इतनी सरलता से हो जाते हैं। किसी को पता ही नहीं पड़ता है इतने बड़े घर में एक सूखा पत्ता न पेड़ में मिलेगा, न नीचे। जब भी क्लास में जायें तो क्लास हमेशा तैयार ही मिलेगा। जबकि क्लास समाप्त होने पर व्यवस्था सम्भालने वाले बाद में जाते हैं और हमसे पहले ही आ जाते हैं। हर व्यवस्था अपने आप में यूनिक दिखती है।

**6. एक्यूरेट दिनचर्या** - ब्रह्ममुहूर्त्त सभी कहते हैं पर ब्रह्ममुहूर्त्त क्यों नाम पड़ा किसी को नही पता, इस समय को सेट किया था ब्रह्मा बाप ने। 3.30 बजे उठना, भगवान का ध्यान करना फिर तैयार होना। ज्ञान-योग का क्लास कर आत्मा को सारे दिन के लिए भरपूर कर हर समस्या का सामना करने के लिए तैयार कर देना।

फिर दैनिक कार्य, दोपहर में 2 घण्टे का रेस्ट, फिर रात को क्लास कर सारे दिन का हिसाब-किताब भगवान को रात को दे 10 बजे सो जाना। शरीर व आत्मा के लिए अति उत्तम दिनचर्या। अगर रात को जल्दी उठे तो दिन में सुस्ती आयेगी, 5 बजे उठने से दिन के कार्यों में देरी होगी, जिससे कोई भी कार्य समय पर नहीं हो सकता। दुनिया में ठीक इसका उल्टा होता है - देर रात तक कार्य करना फिर सुबह देर तक सोना जबकि बचपन से हम सब पढ़ते आये हैं सूर्य उदय होने के बाद सोना पाप है एवं Early to bed, early to rise, पर करते इसके उल्टा है आत्मा को चार्ज करने के लिए तो 24 घण्टे में कहीं भी स्थान ही नहीं है इसीलिए सारी समस्यायें आती है दादी हमेशा कहा करती थी कितना भी जरुरी काम हो पर 10 माना बस। क्या दिनचर्या की सेटिंग है!

**7. पॉवरफुल चार्जर -** 5 हजार वर्ष की न सिर्फ थकान दूर करता है बल्कि पुन: रिचार्ज करते हैं तन-मन दोनों को मधुबन के चार धाम। लोग कहते हैं कि चार धामों की यात्रा करके आत्मा मुक्ति को प्राप्त करती है लेकिन मधुबन के चारों धामों की यात्रा करने के बाद आत्मा जीवनमुक्ति को प्राप्त करती है। शक्ति भरने का चार्जर टॉवर ऑफ पीस, व्यर्थ संकल्प जो आत्मा को भारी करते रहते उसके लिए हिस्ट्री हॉल है, स्नेह का रसपान करने के लिए बाबा रूम और दिल भारी है तो बाबा की कुटिया में जाकर सारा बोझ, सारी थकावट दूर हो जाती है। आत्मा पुन: रिचार्ज होकर अगले चक्र के लिए तैयार हो जाती है। सोचो कितना पॉवरफुल स्थान होगा जहाँ जाने से ही व्यर्थ संकल्प, बोझ खत्म हो जाता है।

**8. ब्रह्मचारी युवा -** विवेकानंद ने कहा था कि अगर मुझे 100 ब्रह्मचारी मिल जाये तो मैं भारत को स्वर्ग बना दूँ पर उन्हें 100 ब्रह्मचारी नहीं मिले पर यहाँ हजारों युवा ब्रह्मचारी रहते हैं। दुनिया में सन्यासी भी पवित्र रहे पर नारी से कोसों दूर रहकर पवित्र रह पाये। पर यहां एक परिवार की भांति सब एक साथ रहते हैं इसका कारण - इनकी अथक साधना एवं निरंतर पुरुषार्थ, व्यस्त रहने ज्ञान योग सम्पन्न दिनचर्या। इनके चेहरों की चमक को देखकर कोई भी बता सकता है कि इनमें पवित्रता कितनी आत्मसात हो चुकी है साधना में इनसे कोई आगे नहीं जा सकता। एक दिन हमने सोचा आज सबसे पहले बाबा रूम में हम जायेंगे हम उस रात को सोये ही नहीं, पढ़ते रहे और सवा बारह बजे चले गये तो देखा कि वहाँ एक भाई बाबा की याद में बैठे थे हमने हार मान ली कि यहाँ के तपस्वियों से आगे जाना ना मुमकिन है। छोटे-छोटे भाई, छोटी-छोटी बहनें एक-डेढ़ बजे तपस्या में बैठ जाते हैं यह कोई एक दिन की बात नहीं यह सालों का अनुभव है। सतत् साधना का रूप इन्हें असीम ऊर्जा प्रदान करता है। इन्हें ऊर्जा का पर्याय भी कह सकते हैं इनके हर काम यथावत समय से पहले ही हो जाते हैं। बड़े से बड़े कार्य एवं कठिन से कठिन कार्य यहाँ चन्द मिनटों में हो जाते हैं और चेहरों पर वही रौनक, उमंग व रूहानियत। मधुर मुस्कान के साथ हर कोई स्वागत करता, मिलता। दुनिया में यह भी कहा गया है कि कोई युवा अगर ब्रह्मचर्य का पालन करता है तो उसके चेहरे पर खुशी नहीं होगी पर यहाँ आकर कोई भी देखे तो उसकी यह धारणा क्षण भर में ही बदल जायेगी है यह है भगवान जादूगर की जादूगरी।

**9. अनोखा उपवन -** दुनिया में हजारों, लाखों उपवन देखे होंगे पर इस चेतन उपवन की बात ही निराली है। जहाँ के पेड़ों को भगवान ने निहारा, सींचा। दुनिया में अच्छी खाद, पानी देकर फूलों व फलों को सुन्दर व बड़ा बनाया जाता है वा कोई भी बना सकता है पर यहाँ तो काँटों को ही फूल बनाया जाता है। इस दुनिया में बहुत मिल जायेंगे जो कंकड को अलग कर सिर्फ मोती चुगते हैं पर यहाँ कंकड़ों को मोती बनाने वाले हंस

बनाया जाता है। एक ऐसा उपवन जिसकी खुशबू सारी दुनिया के मानव मन को आकर्षित करती है। इसके पौधे करीब 130 देशों में प्रस्थापित है जिनकी खुशबू अनेक विकारी बदबू को खत्म करने में निरन्तर प्रयासरत है। तमोप्रधान व जड़जड़ीभूत हो चुकी मानवता को पुन: उसकी चमक व सुन्दरता मे लाने को अनवरत कार्यरत हैं यहाँ का हर फूल अपने आप में निराला है, विशेष है। सबकी बनावट व सुन्दरता, खुशबू अलग अलग हैं इसलिए इस उपवन में बहुत वैराइटी है यह वैराइटी ही इसकी सुन्दरता है। इस उपवन में चौथी कलम के फूल हम भी है पर हमें हमेशा गर्व होता है कि हम इस उपवन के फूल हैं हमारा बागवान संसार का सर्वश्रेष्ठ रचनाकार है, हमारा माली सर्वश्रेष्ठ माली है, हमारा उपवन दुनिया का सर्वश्रेष्ठ उपवन है, हमारा स्थान दुनिया का सबसे सुन्दर, सबसे श्रेष्ठ स्थान है इसलिए जो कोई इसे देखता उसका मन गा उठता है – दिल कहे रूक जा रे रूक जा, यहीं पर कहीं,

जो बात इस जगह है, वो कहीं पर नहीं।

– ब्रह्माकुमारी सुमन, अलीगंज, लखनऊ

# जीवन का स्वर्ण काल – युवा काल

**1–** विकारों की कालिमा से दूर, दुनियादारी के झंझटों से परे, मतलबी, फरेबी, भ्रष्टाचारियों के चंगुल से मुक्त, हताशा, निराशा, उदासी की छाया से परे, हिंसा, कठोरता, कुटिलता व जड़ता से कोसों दूर, आनन्द से भरपूर, एक सच्चा इनोसेन्ट जीवन, बचपन को कहा जा सकता है व सचमुच में ऐसा ही है कई लोग इन्हीं विशेषताओं को देखकर जब दुखी होते हैं तो कहते हैं कि मेरा सब कुछ कोई ले लें और मेरा बचपन वापस ला दे या बचपन के दिन भी क्या दिन थे! आदि-आदि। पर हम तो समझते हैं यह भी एक स्वार्थ है क्योंकि बचपन सिर्फ अपने लिए होता है इसलिए अपने लिए तो ठीक कहा जा सकता है क्योंकि इस उम्र में हम कोई पाप नहीं करते हमें कोई दुख भी फील नहीं होता हम किसी से नफरत व घृणा, ईर्ष्या भी नहीं करते। ये अच्छी ही नहीं किन्तु अति उत्तम बात है परन्तु बचपन दूसरों पर आश्रित होता है हम समाज का, माँ-बाप का कुछ कर्ज अदा करें, अपना फर्ज निभायें ऐसा भी नही होता। किसी के दुःख में सहयोगी बनें, किसी को सुख दें किसी की मदद कर सके ऐसा भी बचपन में नहीं होता।

**2–** लोग कहते हैं कि बचपन सबसे अच्छा होता है ठीक बात है किसी एक दृष्टिकोण से अगर देखा जाये तो बचपन निस्संदेह अच्छा होता है, बिना कोई तपस्या के लोग बचपन को महात्माओं से भी अच्छा मानते हैं क्योंकि बचपन में बुराइयों का भी ज्ञान नहीं होता परन्तु अगर देखा जाये तो अच्छाइयों का भी ज्ञान नहीं होता जिससे दिनोंदिन उन अच्छाइयों का सुख भोगने के कारण उसका खाता कम होता जाता है इस तरह हम देख सकते हैं बचपन सिर्फ खर्च करने का समय होता है जहाँ पर हम अपनी कमाई पाप के खाते में बर्बाद नहीं कर रहे हैं पर खा तो रहे हैं और कोई पुण्य करके जमा भी तो नहीं कर रहे हैं इसलिए कम ही होता जाता है।

**3–** लेकिन युवाकाल वह स्वर्णिम काल है जिसमें हम जितना चाहे उतना जमा कर सकते हैं। जैसे भूत और भविष्य हमारे हाथ में नहीं होता है परन्तु वर्तमान के आधार से भूत और भविष्य दोनों को सुधारा जा सकता है। जिस प्रकार वर्तमान अगर सफल करे तो वो लम्बा होता है, नहीं तो वर्तमान सिर्फ एक पल ही होता है, क्षण भर पहले भविष्य था, क्षण भर बाद भूत बन जायेगा। इसी प्रकार युवाकाल को श्रेष्ठ बनाये तो बचपन व वृद्धावस्था दोनों ही ठीक हो जाते हैं।

**4–** अगर हम इतिहास का अवलोकन करे तो उसमें कुछ अपवादों को छोड़ दें तो जितनी भी क्रांतियां हुई, कुछ अलग हटकर हुआ, कुछ विश्व विख्यात परिवर्तन हुआ तो वह युवाओं ने ही कर दिखाया। अगर किसी ने जीवन के चौथे दौर में भी किया तो भी उसका बीज अर्थात संकल्प युवाकाल में ही लिया गया था, कार्य विराट होने के कारण सम्पूर्ण होते होते युवाकाल बीत गया। चाहे वो धर्म क्षेत्र हो या कर्मक्षेत्र अर्थात सामाजिक कार्यक्षेत्र या आजादी की लड़ाई हो या फिर विज्ञान का क्षेत्र हो या खेल जगत हो, सभी क्षेत्रों में युवाओं का कोई सानी नहीं रहा, क्रांतिकारियों का एवं खेल जगत का सारा का सारा क्षेत्र ही युवा जीवन पर निर्भर होता है। विवेकानंद, शंकराचार्य, महात्मा बुद्ध, ईसामसीह, राजाराम मोहनराय, झांसी की रानी, सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, जेम्सवाट, ध्यानचन्द, सचिन तेन्दुलकर, विश्वनाथन आनन्द आदि सभी अपने जमाने का शीर्ष रहे। ऐसे कहाँ तक नाम गिनाये जिन्हों ने अपनी सफलता का परचम नीले आसमान तक फैलाया, कारण? विराट इरादें, अदम्य

साहस, प्रबल पुरुषार्थ की ललक, दृष्टि में लक्ष्य की चमक, बुलंद हौंसलें, सितारों को छूने की तमन्ना, आसमान पर चढ़ने का हौसला, तूफानों का रूख मोड़ देने की क्षमता, खतरों से खेलने की हिम्मत, सागर को थाह लेने की अटूट ललक, मंजिल को प्राप्त करने का जज्बा, कुछ कर दिखाने का अविरल प्रयास, कठोर परिश्रम, मर मिटने का जुनून, परीक्षाओं का आह्वान आदि अनेकों विशेषताओं से वह सम्पन्न है और ये सभी विशेषतायें उसमें पर्याप्त मात्रा में होती है जिसके कारण युवा वर्ग सदा चोटी पर फतह कर लेता है एवं सफलता की बुलंदी को सहज हासिल कर लेता है अर्थात वो जो चाहे सो कर सकता है।

**5–** संसार में हर कार्य के लिए यहाँ युवा ही ढूँढा जाता है, युवाकाल जीवन का वह स्वर्णिम काल है जिसमें हर प्रकार की सहज सफलता सहज प्राप्त की जा सकती है इसीलिए ही हर जगह युवाओं की माँग 100 प्रतिशत रहती है। मजदूर से लेकर नेता तक, फैक्ट्री से लेकर कृषि तक, नौकरी, बिजनेस, राजनीति से लेकर धर्मनीति तक, गवर्मेन्ट से लेकर भगवान तक, हरेक की तलाश युवा पर ही जाती है। गवर्मेन्ट भी 18 से 35 वर्ष आयु सीमा रखती है, भगवान भी जब विश्व परिवर्तन के लिए धरा पर अवतरित होता है तो स्वयं तो वह गुप्त है इसलिए सारे कारोबार की बागडोर युवाओं को थमायी, भगवान ने उनकी क्षमता का आंकलन करके ही दिया होगा। सेना में तो युवाकाल के बाद सेना छुट्टी ही कर देती है। युवा जीवन सफलता की सीढ़ी चढ़कर चोटी पर पहुँचता है व पहुँच सकता है पर चोटी पर कायम रहने के लिए एक पेड़ की तरह अपनी जड़ों को मजबूत रखना होगा नहीं तो थोड़ा सा भी ध्यान इधर उधर हुआ अटेन्शन हटा, डगमग हुए तो सीधे नीचे।

**6–** युवा काल एक ऐसे चौराहे के समान भी होता है जिसको समझकर पार कर लें, तो निष्कंटक, निर्विरोध गतिशील जीवन अपने लक्ष्य की ओर अनवरत बढ़ता जाता है। जिस प्रकार दीपक को जाग्रत रखने के लिए उसे तूफान से बचाकर रखना होता है- दूसरा घृत का भी ख्याल रखना होगा। इसी युवाकाल में मुख्यतः सात अवरोध आकर्षण के रूप में आते हैं जो न चाहते हुए युवा को खींच कर ले जाते हैं, ये सात माया के रूप युवा काल में ही फंसाने के लिए आते हैं न बच्चों में न वृद्धों को ही ये मायावी रूप आते हैं। इसलिए भाइयों कैसे भी करके इन्हें पहचान कर इनसे बचना ही होगा नहीं तो धीरे-धीरे वह लक्ष्य की ओर ले जाने वाले पथ पर एक विशाल अवरोध बन कर खड़े हो जाते है। अवरोध भी इतने बड़े कि फिर मन वह रास्ता बदलने को सोचने लगता है। पहले तो वह आकर्षण सुखदाई लगता है, लेकिन यह सब मृगतृष्णा समान दुख जनित बीज होता है। जो सीधे दुःखों के सागर में डुबोता है या फिर समस्याओं के पहाड़ के नीचे दबाता है। मानो मुश्किलों एवं उलझनों की खाई में धकेलता है या दिलशिकस्ती या हीन भावना के दलदल में धंसाता है । या तो आवेश या आवेग की ज्वाला भड़काता है या पश्चाताप व चिन्ता की अग्नि मे जलाता है। इसलिए भाइयों यह जो स्वर्णिम अवसर नियति व जगतनियंता के सहयोग से आपको मिला हुआ है उसे 20 नाखूनों की ताकत लगाकर उसे न सिर्फ अपना भाग्य बनाना है बल्कि अनेक बहकते कदमों का सजग सहारा बन उन्हें भारत का भविष्य दिखाना है। अनेक दुखी गरीब मजबूरों का मजबूत आधार बन उनके भी भाग्य के दरवाजे खोल देना है। मानव सहित प्रकृति के नवीनी करण अर्थात परिवर्तन के निनित्त बन स्वर्णिम संसार बनाने में जगत नियन्ता का मददगार बनना है। जिन सात बातों से

आप अपने को बचायें उसमें सबसे पहले है—

1) कुसंग – भाइयों इस मायावी रूप को पहचानने में सबसे अधिक धोखा होता है क्योंकि इसकी शुरुवात संग से होती है। पर यह कुसंग कब बन जाता है कुछ पता नहीं पड़ता, इसलिए पहले ही सावधान रहो तो सबसे अच्छा। इसमें खास अपोजिट साइड का संग कभी भी नहीं करना चाहिए यह एक ऐसी मीठी तलवार है जो सारे पुण्य काटकर रख देती है जिसके लिए कहावत है कि संग तारे -कुसंग बोरे। बुराइयों की जड़ कुसंग सें ही होती है। इसलिए मेरे युवा भाइयों जिसका साथ पाने के लिए लोगों ने अपना राजाई छोड़ी, तख्त छोड़ दिया, सारे सुख सुविधाओं का त्याग कर वन गमन किया फिरभी उसका साथ नहीं मिला, जिसको साथी बनाने कि लिए लोगों ने अनेंक हठ-तप-जप किये पर उसका साथ न मिला। और जब आपको उसका साथ मिला तो अब सिर्फ और सिर्फ उसका साथ करना चाहिए। बाकी का साथ भले करें पर साथी न बनायें, न बनें। सम्बन्ध निभायें पर बन्धन न पालें। यही आकर्षण दूसरे आकर्षण का जन्मदाता है।

2) व्यसन – व्यसन कोई भी हो, सभी दुखदाई ही हैं यह बुराई एक ऐसी कैंची है जो न सिर्फ सम्बन्धों की गरिमा को काट कर रख देती है बल्कि हमारी बुद्धि की शक्ति को भी काट कर रख देती है। खासकर निर्णय व परख शक्ति को। व्यसन की शुरुवात खुशी की तलाश में होती है पर जीवन पर्यन्त व्यसनी खुशी की ही तलाश में भटकता रहता है। खुशी की परछाई भी उससे कोसों दूर रहती है। मेरे भाइयों क्या तुम व्यसनों को परख पाओगे अगर नहीं तो अपने सामने ब्रह्माबाप की जीवन को खोलकर कहीं से भी देख लो। पता पड़ जायेगा हमें जीवन में क्या-क्या करना है व क्या-क्या नहीं करना है। यही आकर्षण तीसरी बुराई के निमित्त बनता है।

3) आधुनिकता – अगर हम इसको फैशन का नाम दें तो ज्यादा ठीक लगेगा। आधुनिक जमाने का हवाला देकर बनावटी पन का नकली आवरण ओढ़कर अपने को स्मार्ट दिखाने की मंसा भले खुद को सन्तुष्टि प्रदान करती हो पर तब तक ही जब तक आप अपनी वाणी को विराम लगाये हुए हैं वाह्य पर्सनैलिटी तभी तक प्रभावशाली है जब तक आप चुप हैं। गांधी जी की सुन्दरता जग जाहिर है मदर टेरेसा जैसी सुंदरता तो सारी दुनियां में अभी तक किसी को नहीं मिली और इन दोनों की सुन्दरता ने अनेक लोगों को भी सुन्दर बनाया और इनकी सुन्दरता जीवन के अन्तिम पड़ाव तक निखरती गयी, चाहे मुंह में दांत नहीं थे वा सिर के बाल सफेद थे या चेहरे पर झुर्रियां थी भले ही उन्हें विश्व सुन्दरी का खिताब न मिला हो पर उनकी सुन्दरता आज भी सभी लोगों के मानस पटल पर अंकित है। मेरे भाइयों फैशन एक ऐसा कुआं है जिसमें खुद तेा गिरते ही हैं दूसरो ं को भी गिराने के निमित्त बनते हैं। किसी भी उल्टी चाल का अनुसरण करना यह बुद्धि हीनता का ही प्रतीक है। धारा से अलग चलने की हिम्मत जिनमें नहीं होती वही फैशन का अनुयायी बनता है। देखो मेरे भाई नहर के लिए रास्ता बनाया जाता है और तालाब खोदे जाते हैं, और नदी अपना रास्ता खुद बनाती है और सागर भी स्वतः बने होते हैं इसलिए जो महिमा नदी व सागर की है वह नहर व तालाब की कभी भी नहीं होती। फैशन एक शारीरिक आकर्षण है जो सिर्फ विकार ही पैदा करता है। और अगर इसमें फंसे तो फैशन का फंदा श्रेष्ठ जीवन के लिए फांसी का फंदा बन जायेगा। यह विलासिता पूर्ण जीवन भोगी जीवन कहलाता है। इसलिए इससे सदा खबरदार रहो।

4) ख्याली ख्वाब– जिसको हम कोरी कल्पना भी कह सकते हैं यथार्थ के धरातल पर वही सफल है जिसने प्लान प्रैक्टिकल में लाना सीखा है। ख्वाबों की उड़ानें क्षण भरमें ही धरासायी होती हैं वर्तमान में जीना सीखें , भविष्य का भविष्य में देखें। जैसे जो सामने हैं उसे अच्छे से अच्छा करना है वर्तमान भविष्य की दिशा तय करता है। सिर्फ सोचने से कुछ नहीं होता, जैसे मूर्तियां कम्पलीट तैयार तो फुटपाथ पर या मूर्तिकार के घर पर भी रखी होती हैं पर जब तब वह मन्दिर में प्रस्थापित नहीं होती तब तक उनकी वैल्यू सिर्फ एक पत्थर के समान ही रहती है। मन्दिर में प्रस्थापित होने पर ही उनकी पूजा होती है व देव-देवी की उपाधि से उन्हें विभूषित किया जाता है वा उनमें दूसरों की मनोकामना पूर्ण करने की समर्थी मानी जाती है। ठीक इसी प्रकार जब तक प्लैन को दृढ़ता के साथ प्रैक्टिकल में लाने का पुरुषार्थ नहीं करते तब तक वह ख्याली ख्वाब सिर्फ ख्याली सुख दे पायेगे और समय भी हाथ से निकल जायेगा। चांस भी चला जायेगा। इसके कारण ही पांचवां आकर्षण पैदा होता है।

5) निगेटिविटी– इसमें हम व्यर्थ को भी एड कर देते हैं। व्यर्थ उल्झा हुआ रास्ता है तो निगेटिविटी उल्टा रास्ता है। जाना पूर्व में है चल रहे हैं पश्चिम में...

और पश्चिम रास्ता का ढूँढ रहे तो लक्ष्य कब मिलेगा भगवान ही मालिक। व्यर्थ अवरोध पैदा करता है पर निगेटिव भटकने व लुढ़कने का पथ है जिस पर चलकर की हुई प्राप्तियां भी खत्म हो जाती हैं। व्यर्थ स्पीड ब्रेकर हैं तो निगेटिव पथ को ही ब्रेक करने वाली है जिससे टोटल रास्ता ही चेन्ज हो जाता है। जैसे शुद्ध दूध में एक चुटकी नमक डाल दें। यह निगेटिविटी सफलता के लिए दुश्मन की तरह है इसलिए हे सफलता के सितारों तुम्हें इसके चंगुल से बचना होगा। निगेटिविटी ही छठे नम्बर की बुराई का कारण बनती है।

6) ईर्ष्या – यह ईर्ष्या एक ऐसी आग है जो शरीर और मन को एक साथ जलाती है, मन की शक्तियों को खाक कर उसमें अहं का जहर भर देती है। जिसका धुआं सामने वाले को न सिर्फ मुंझाता है बल्कि उसे जलाता भी है। ईर्ष्यालू अपना फायदा नहीं देखता सामने वाले का घाटा कितना हुआ इसमें उसको दिली सुकून मिलता है। जिसके आगे दुनियां का हर सुख फीका है। हम कैसे भी हों सामने वाला हमसे अच्छा न हो। जैसे बन्दर अपना घर तो बनाता ही नहीं पर चिड़ियों का घर उसे अच्छा नहीं लगता वह उसे पलभर में ही तोड़-फोड़ डालता है जबकि वह उसके रहने के लायक भी नहीं होता। इसी प्रकार गाय जब घास खाती है तो कुत्ते उसके आगे-आगे भौंकते हैं उसे खाने नहीं देते, जबकि घास कुत्तों के खाने की चीज नहीं। ईर्ष्या की अग्नि का झोंका श्रेष्ठ जीवन के पथ का जहर है जो चरित्र रूपी अमृत को एक बूंद से ही बेकार कर देता है। ईर्ष्यालू को जीने का मकसद ईर्ष्या से शुरू होकर ईर्ष्या में ही खत्म हो जाता है वह कभी भी शान्ति का अनुभव नहीं कर सकता। अपने साथ-साथ अनेको का जीवन बर्बाद हो जाता है। इस बुराई का प्रखर व विकराल रूप ही अगली बुराई है।

7) मद – रोब, जोश, जिद्द यह सब रूप इसी (मद) की निशानी हैं। रावण के पास ज्ञान, बुद्धि, शक्ति, भक्ति सब कुछ पर्याप्त मात्रा में माना गया है पर अहम् के कारण ही असुर कहलाया। सबकी घृणा का पात्र बना और विनाश को प्राप्त हुआ। ऐसा दिखाया गया है। इसी प्रकार सारी शक्तियां

विशेषतायें व प्राप्तियां नष्ट करने का कारण यह मद ही बनता है। यह एक ऐसे पहाड़ की चोटी से गिरने के समान है जहां से गिरने के बाद फिर कहीं से भी सलामत नहीं बचते। मद का आधार लेकर व्यक्ति सफलता की बुलन्दियों को छूने के बजाये बदनामियों व बद्दुआओं की बुलन्दियां अवश्य छू लेता है। छू क्या लेता है काबिज ही हो जाता है, शराब का नशा तो थोड़े समय के बाद फिर भी उतर जाता है, पर मद का नशा तो सदा चढ़ा रहता है व निरंतर बढ़ता ही जाता है। जिस नशे से मन मलीन, बुद्धि विहीन, स्वभाव चिड़चिड़ा संस्कार कट्टर,वृत्ति दूषित, दृष्टि कलुषित, स्मृति कमजोर, भावना अशुभ, भाव कटु, बोल जहरीले और कर्म विकर्म बनते चले जाते हैं। जिससे हर व्यक्ति दूर-दूर रहने लगता है। जिसके कारण ऋषि भले बने हों पर दुर्वासा ऋषि के समान ही रहते हैं। जिससे उनकी विषेशता व गुणों की प्राप्तियों से किसी को सुख नहीं मिलता। इन सातों जहरीले सांपों के जहर के आत्मा के सभी गुणों का ह्रास होता है। माया ने सभी गुणों को नष्ट करने के लिए अलग-अलग अपने तीर चलाये हैं।

भाइयों क्या तुम्हें पता है – कुसंग के आत्मा की पवित्रता रूपी शक्ति का ह्रास होता है। व्यसन से शक्ति का पतन, आधुनिकता से आनन्द नष्ट होता है। मद से ज्ञान खत्म होता है। ईर्ष्या से प्रेम, निगेटिविटी से शान्ति, और ख्याली ख्वाब सुख ले जाते हैं। अब इन सातों को नष्ट करने के लिए परमात्मा के सात तीरों का उपयोग करो तेा विजय तुमसे दूर कभी नहीं जा सकती।

वह सात शस्त्र हैं—

1. कड़ी मेहनत - इसका कोई सब्सीट्यूट नहीं होता, मेहनत का कोई विकल्प नहीं, मेहनत वाला कभी-भी दास नहीं उदास नहीं, भूखा नहीं किसी के उपहास से नहीं डरता, कभी सिर झुकाकर नहीं चलता। हर मंजिल का अधिकारी बनता। इसलिए भाईयों कभी भी कामचोर न बनो। कुछ बनने के लिए कड़ी मेहनत करना ही होगा। चींटी कभी थकती नहीं इतने छोटे जीव के जितना भी क्या अक्ल तुम्हारे पास नहीं होगी ?

2- सतत प्रयास – करत-करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान रसरी आवत जात है सिलपर पड़त निशान, क्या तुमने नहीं सुना ? कच्ची मिट्टी का घड़ा भी पक्के फर्श को घिस देता है बार-बार रखने से, इसलिए भाइयों जब तक रहना है अभ्यास जारी रखना है, हार हर बार कुछ नया सिखाती है, हार हार नहीं बल्कि एक नया रास्ता ढूंढ़ने का चांस है इसलिए कभी रूको नहीं, पीछे लौटने के रास्ते सारे बन्द कर दो तुम्हें सिर्फ आगे बढ़ना है।

3) अटूट हिम्मत – ये भगवान का वादा है तुम एक भी कदम हिम्मत का बढ़ाओगे वह सौ कदम आपको आगे बढ़ायेगा। इसलिए हिम्मत की डोर कभी भी टूटने न पाये, अगर हिम्मत नहीं तो मरने के पहले न जाने कितने बार रोज मरते रहेंगे, ऐसा जीवन भी क्या जीवन है। क्या नचिकेता प्रह्लाद की हिम्मत तुमने नहीं सुनी ? कान्तिकारियों की हिम्मत क्या तुमने कहीं नहीं पढ़ी ? विवेकानन्द की हिम्मत की गाथा क्या तुमको नहीं पता ? फिर तुम्हारे साथ तो सर्वशक्तिवान है तुम्हें हिम्मत के साथ सदा सफलता को प्राप्त करना ही है।

4) आत्मचिन्तन – परचिन्तन पतन की जड़ है यह भगवान ने कहा है, आत्मावलोकन उतना ही जरूरी जितना जरूरी एक्सीडेन्ट होने पर एक्सरे की। दूसरों के चिन्तन में समय बर्बाद कर उनकी

कमियों को भी अपने मन में शरण देने के बजाये आत्मचिन्तन कर अपनी कमियों को दूर भगाना ही बुद्धिमानों की पहचान है। तुम्हें मक्खी नहीं मधुमक्खी बनना है।

5) अनवरत साधना– संस्कार परिवर्तन करना पहाड़ हटाने से भी मुश्किल कार्य है। इसके लिए चाहिए अनवरत व कठिन साधना। 2500वर्ष के विकारों के बन्धनों को काटना व आधाकल्प के संस्कारों को मोड़ना आसान कार्य नहीं है पर प्रज्वलित अग्नि बड़े व कड़े लोहे को भी पिघलाकर पानी जैसा तरल बना देती है। ऋषि मुनियों ने विकारों को जीतने के लिए अनेक उपाय किये पर सफल नहीं हुए क्योंकि विधि सही नहीं थी इसलिए सिद्धि की प्राप्ति नहीं परन्तु बाबा ने जो विधि बतायी है उस साधना में अनवरत लगना ही होगा। हर मुश्किल को पार करने का उपाय है अनवरत साधना।

6) सच्चा दिल – सच्चे दिल पर साहेब राजी। भाइयों जिन्दगी में कुछ सीखो या न सीखो पर सच्चाई जरूरी सीख लेना, सच्चे दिलवाला ही भगवान के दिल पर राज कर सकता है जो दिल पर है वही अधिकारी बनता है। सच्चाई सदा शुद्ध बनाती है, सच्चाई सदा पवित्रता के नजदीक लाती है। सुख के सागर को अपना बनाने के लिए सच्चाई को साथी बनाना ही होगा। सच्चाई का आदि-मध्य-अन्त रूप खुशियां बरसाने वाला ही होगा व निश्चिन्तता प्रदान कराने वाला ही होगा। इसलिए युवा भाइयों सच तो बिठो नच सच्चे बनो अच्छे बनों, पक्के बनो।

7) उद्देश्य पूर्ण जीवन – भाइयों तुम कह सकते हो कि बिना उद्देश्य के कोई नहीं जीता हमारा कहने का भावार्थ है कि पैसा कमाना कोई पद प्राप्त कर लेना , कुछ डिग्रियां ले लेना, कुछ मकान बना लेना, सुख के साधन इकट्ठा कर लेना, कोई प्याऊ खोल देना, थोड़ा-सा अनाज बंटवा देना, या कुछ कम्बल बंटवा देना, मात्र ये उद्देश्य जीवन के उद्देश्य बना लेना, कहाँ की समझदारी है यह तो सब आपके शरीर नष्ट होते ही खत्म हो जायेंगे। असली उद्देश्य तो वह हैं जो शरीर छोड़ने के बाद कार्य जहां समाप्त किया था वहीं से आगे की शुरुवात हो। मेरे भाइयों कहीं आपका भी तो ऐसा ही तो लक्ष्य नहीं है ? पैसे के साथ सन्तुष्टता रूपी धन कमाना भी उद्देश्य हो, पद के साथ स्वमान का भी नशा हो, डिग्रियों के साथ गुणों की गहराई भी हो, मकान-दुकान साधन के साथ मन का ठिकाना, स्थाई घर, ज्ञान का भण्डार दान करने के लिए पर्याप्त, साधनों के साथ साधना, सोशल सर्विस के साथ शुभ भावनाओं का दान व खुशी का दान करने का वा सबको भगवान का बच्चा बनाकर उसके वर्से का अधिकारी बना देना आधा कल्प के लिए सुख शान्ति, स्वास्थ्य अविनाशी प्राप्त करवाने का लक्ष्य हो। भाइयों ये सब कार्य इसी युवा काल में ही कर सकते हैं। क्या तुम्हें यह जागृति है, अगर नहीं तो अब सचेत हो जाइये कहीं माया आकर अपना वर्चस्व न कायम कर ले। स्वर्णिम संसार जब तक नहीं आ जाता तब तक इस युवा काल को समाप्त नहीं करना है। ओमशान्ति।

बी.के. सुमन अलीगंज, लखनऊ

विशाल बुद्धि
तीव्र बुद्धि
तीक्ष्ण बुद्धि
पवित्र बुद्धि
शुरूड़ बुद्धि
प्रीत बुद्धि
सतो बुद्धि
श्रेष्ठ बुद्धि
हंस बुद्धि
स्थिर बुद्धि
दिव्य बुद्धि
शान्त बुद्धि
निश्चिंत बुद्धि
नवीन बुद्धि
कुशल बुद्धि
प्रवीण बुद्धि
रचनात्मक बुद्धि
अनुशासित बुद्धि
निश्छल बुद्धि
प्रखर बुद्धि
चुस्त बुद्धि
तेज बुद्धि
किफायती बुद्धि
चमत्कारिक बुद्धि
करामाती बुद्धि
सदाबहारी बुद्धि
स्थिर बुद्धि
दृढ़ बुद्धि
एकाग्र बुद्धि
सहयोगी बुद्धि
दूरांदेशी बुद्धि
सतयुगी बुद्धि
सद्बुद्धि
निश्चय बुद्धि
ईश्वरीय बुद्धि
अलौकिक बुद्धि
कलात्मक बुद्धि
उपकारी बुद्धि
स्वच्छ बुद्धि
होशियार बुद्धि
प्यूवर बुद्धि
शक्तिशाली बुद्धि
समर्थ बुद्धि
अविनाशी बुद्धि
कुलीन बुद्धि
हितकारी बुद्धि
गुणग्राही बुद्धि
अच्छी बुद्धि
उत्साही बुद्धि
शालीन बुद्धि

मंद बुद्धि
विप्रीत बुद्धि
तर्क बुद्धि
पत्थरबुद्धि
तमोप्रधान बुद्धि
बगुला बुद्धि
चंचल बुद्धि
दुबुर्द्धि
लकड़ बुद्धि
रबड़ बुद्धि
विस्फटोक बुद्धि
जड़ बुद्धि
कर्कश बुद्धि
चिंतित बुद्धि
नकारात्मक बुद्धि
ढीली बुद्धि
सुस्त बुद्धि
चालाक बुद्धि
कपटी बुद्धि
नीरस बुद्धि
ईष्यालू बुद्धि
कुटिल बुद्धि
संशय मंद बुद्धि
विप्रीत बुद्धि
तर्क बुद्धि
पत्थरबुद्धि
तमोप्रधान बुद्धि
बगुला बुद्धि
चंचल बुद्धि
ईष्यालू बुद्धि
कुटिल बुद्धि
संशय बुद्धि
शंकालू बुद्धि
उदास बुद्धि
प्रश्नात्मक बुद्धि
अविकसित बुद्धि
नादान बुद्धि
ठग बुद्धि
कलियुगी बुद्धि
विकारी बुद्धि
रावण बुद्धि
बन्दर बुद्धि
आसुरी बुद्धि
तोता बुद्धि
भैंस बुद्धि
कुतर्की बुद्धि
जानवर बुद्धि
अपकारी बुद्धि
निगेटिव बुद्धि
हट्ठी बुद्धि
हीन बुद्धि
दिलशिकस्त बुद्धि
गंदी बुद्धि
कुबुद्धि
संकोची बुद्धि
भ्रष्ट बुद्धि
पुरानी बुद्धि
चतुर बुद्धि
खराब बुद्धि
जीर्ण बुद्धि
मलिन बुद्धि

# ''भगवान का काम कभी रूक नहीं सकता''

12 अप्रैल 2010 को कॉलेज के एन्यूवल फंक्शन का दिन था, एक सप्ताह पूर्व ही इसकी तैयारियाँ आरम्भ हो चुकी थी। इंजिनियरिंग का फाइनल ईयर था। कुछ माह पूर्व ही मन में संकल्प था कि कॉलेज से जाते जाते एक बार तो बाबा का सन्देश सबको देते जाना है। बस, फिर क्या था बच्चों का संकल्प और बाबा पूरा न करे ऐसा हो सकता है क्या?

एक सप्ताह पूर्व ही मन को इसी सेवा में बिजी कर लिया था लेकिन भगवान का कार्य और कोई विघ्न न आये ऐसा हो नहीं सकता, ऐसे ही थोड़े ही हमारे बाबा ने हमको चुना है। इसके लिए भी मन को पहले ही तैयार कर लिया था। बाबा का सन्देश देने के लिये एक ड्रामा (नाटक) करने का संकल्प आया। धीरे-धीरे नाटक की स्क्रिप्ट लिखना, एक्टर्स इकट्ठे करना सबमें विघ्न तो आते रहे लेकिन मन में यह दृढ़ निश्चय था कि भगवान का कार्य कभी रूक नहीं सकता बस, यह बुध्दि में जैसे कि भरा हुआ था।

इस नाटक में एक वीडियो दिखाना था लेकिन कॉलेज के हेड सर (सी ई ओ) ने साफ मना कर दिया और कहा कोई दूसरी स्क्रिप्ट देख लो। लेकिन हमने और बाकी एक्टर्स ने निश्चय कर रखा करेंगे तो यही। हर रोज हेड सर के नये बहाने की प्रोजेक्ट नहीं मिलेगा, स्क्रीन एडजेस्ट नहीं होगी... परन्तु निश्चय तो था ना कि भगवान का कार्य कभी रूक नहीं सकता।

हर रोज दूसरे एक्टर्स आकर हमसे पूछते कैसे होगा, होगा कि नहीं होगा और हम सिर्फ एक ही लाइन दोहराते कि भेया भगवान का कार्य है रूक नहीं सकता।

12 अप्रैल के दिन दोपहर के समय हेड सर ने हमको फटकार लगाई कि आपको समझ नहीं आता जो चीज़ सम्भव नहीं आप तो क्यों करना चाहते, फिर भी हमने सिर्फ मुस्कुराते हुए कहा सर भगवान का कार्य है इसीलिए सम्भव भी है। 9 बजे फाइनल हमारा फाइनल नाटक का प्ले होना था, उसके पहले शाम को 5 बजे बाबा ने किराये से हमको प्रोजेक्ट स्क्रीन का इंतजाम करवा दिया। तब जाकर हेड सर को समझ आया और फिर उन्होंने कॉलेज से प्रोजेक्ट का इंतजाम करवाया।

इसके बाद 9 बजे नाटक होना था अभी तो अन्तिम समय तक विघ्नों का इंतजार कर रहा था। सबसे बड़ा विघ्न तब आया जब नाटक शुरू होने के ठीक पहले, जब पर्दा खुला तो तकनीकी समस्याओं की वजह से म्यूजिक सिस्टम बन्द हो गया और नाटक कैन्सिल करने के कगार पर आ गया। लेकिन मन में दृढ़ निश्चय तो था ना कि भगवान का कार्य बस फिर क्या हमें बाबा ने खुद कन्ट्रोल रूम भेजा और हमने तकनीशियन को सलाह दी कि आप फिर से इसे दूसरे सॉफ्टवेयर में चलायें। इसी तरह दुबारा पर्दा खुला और फिर से वह नाटक शुरू हुआ और फिर बाबा का सन्देश हजारों की तादाद में बच्चों और उनके पालकों को देते हुए सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। हजारों दशकों के तालियों की गड़गड़ाहट ने दिल में सन्तुष्टता और खुशी की लहर दौड़ा दी और इसी तरह अन्तिम समय तक आये विघ्न भी भगवान के कार्य को रोक नहीं पाये।

सबसे अच्छा अनुभव तो यह रहा कि जिनसे हमने प्रोजेक्ट स्क्रीन किराये पर ली थी उन्होंने किराया लेने से ही मना कर दिया और कहा कि आपने हमें पहली बार सेवा का मौका दिया, हम नहीं ले सकते।

बस, फिर आज भी दिल यही कहता प्यारे बाबा आपका कार्य तो कभी रूक नहीं सकता।

*बी.के.शशांक भाई. ओमशान्ति भवन, इन्दौर*

# युवा-बहनों का आह्वान

**(बी.के.सुमन, अलीगंज, लखनऊ)**

कलियुग के अन्त में हर चीज़ की अति हो जाती है, हर बुराई अपने चरम सीमा को पार कर रही है, कहीं दहेज का दानव, कहीं अहम् की आग, कहीं अत्याचार का आतंक, कहीं अपहरण का तूफान, कहीं वहसियत का भूत, कहीं हैवानियत की राक्षस, कहीं भेदभाव की दीवार, कहीं रूप-रंग का दावानल, नित्य कितनों को लीलता है कितनों को वे मौत मार रहा है, कितनों को जीते जी मार रहा है, कितनों को तिल-तिल कर मार रहा है, कितनों को जिन्दा लाश बना दे रहा है, कितनों को जिन्दा जलाया जा रहा है। किसी को तेजाब पिलाया जा रहा है, किसी को सरे राह उठाया जा रहा है। कौन रोकेगा इस जलजले को, कौन बनेगा रहनुमा, कब आयेगा मसीहा, कैसे होगा चमत्कार, खौफनाक खतरों से कितनों को बचाया जा सकता है ? कितनों को दी जा सकती है सुरक्षा ? जिनसे सुरक्षा की आश लगाये बैठे हैं वही निगलने को तैयार बैठे हैं - कहीं कोई बाप का शिकार, कहीं भाई का प्रतिकार, कहीं पति की प्रताड़ना, कहीं परिवार की ज्यादतियां, कहीं पड़ोसियों का उत्पीड़न, कहीं बॉस की मनमानी, कहीं किसी का तो कहीं किसी का शिकार लड़की को बनना ही पड़ता है। न कोई सुकून की जगह, न कोई विश्वास पात्र, जिसके साथ सदा के लिए सुरक्षित एवं चैन से रहा जा सके। कब किसके मन में भूत सवार हो जाये कुछ पता नहीं। इतनी मजबूर, लाचार, बेबस, असहाय, गरीब, अनाथ बहनों पर अत्याचार, अन्याय और शोषण होते देख क्या तुम्हारे मन में कोई संकल्प नहीं चलता, एक असहाय लड़की की करुण कथा सुनकर तुम्हारे मन में क्या कोई दया रहम नहीं आती ? एक चचेरे भाई की लालची प्रवृत्ति के कारण उसको पागल घोषित करवाकर उसे हॉस्पिटल में डलवा देता है, बाद में उसकी छोटी बच्चियों की भी जिन्दगी खराब करता, उसका बाप ऐसी दारुण दशावाली बहन की करुण कथा पर क्या तुम्हारा जरा भी दिल नहीं पसीजता ? 23 वर्ष की बहन 2 वर्ष की शादी, 1 वर्ष की बच्ची, दहेज की अन्धी पट्टी बांधकर उसे दो गिलास तेजाब पिलाया, जिन्दगी मौत के बीच दो दिन संघर्ष फिर मौत... क्या तुम्हें इस कहानी में कोई दर्द नहीं दिख रहा ? 12 वर्षों से ये पिता ने बच्ची को नज़रबंद करके रखा उसके 6 बच्चे ऐसे वहसियों को कौन सजा दे रहा है, अगर उन्हें सजा कुछ मिली भी तो भी क्या उनका वह जीवन, वह खुशी, स्वच्छ जीवन क्या दुबारा मिल पायेगा ? कई बच्चियाँ तो इस खौफनाक मंजर से गुजरने के बाद अपनी आवाज ही खो बैठती है अंतर्मन की चेतना खोकर गुम-सुम हो मनुष्य को देखकर ही भयभीत हो उठती है क्या तुम्हें उनकी आह की चीत्कार सुनाई नहीं देती ? घर-घर में भेद भाव की दीवार, 21वीं सदी भी इस मजबूत दीवार को तोड़ नहीं पाई। जगह-जगह होर्डिंग्स लगे हैं बिटिया की शादी बेटे की पढ़ाई, घर के छोटे-छोटे काम या पढ़ने, लिखने, खाने-पीने, पहनने घूमने में भेदभाव आज जर्रे-जर्रे में व्यापक हो चुका है हर घर की ये कहानी है। जब अपनी लड़की में भेदभाव है तो पराये घर से आई हुई लड़की के साथ कितना ईमानदारी से व्यवहार होगा ? कोई कोई को पैदा होने पर मार दिया जाता है, कोई को पैदा होने के पहले ही गर्दन मरोड़ दी जाती

है। राजस्थान के एक गांव 100 वर्ष बाद बरात आई, 100 वर्ष तक उस गांव में किसी लड़की को जिन्दा नहीं रहने दिया गया। कहीं कोई उबाल कर खा रहा है तो कहीं कोई अंग काट-काटकर फ्रिज में रख देता है यह अत्याचार, पापाचार यह बेरहमी आखिर कब तक सहन करती रहोगी।

कोई काम के नहीं है, कोई काम नहीं, दिन भर घूमना, शराब पीना, घर आकर पत्नी को मारना, हुकुम चलाना, तानाशाही झाड़ना, बच्चों की कोई खबर नहीं, घर है या नहीं, कोई फिकर नहीं, बच्चों को पालना पत्नी का काम, पैदा करना पुरुष का काम। कुछ गल्ती की पकड़े गये सन्यासी बन गये, घर छोड़कर चले गये, घर की जिम्मेवारी से मुक्त, 6 छोटे-छोटे बच्चे कौन करेगा उनकी परवरिश ? वह, जिसे 2500 साल से अबला कहते आये ? जिसने कभी खेती देखी नहीं, धन्धा धोरी जानती नहीं, बच्चों को क्या बनाये, कैसे बनाये कुछ रास्ता नहीं दिख रहा। बेचारी माँ दया की देवी, वह तो बच्चों को छोड़कर नहीं जा सकती वह किसी भी बच्चे का दुख नहीं देख सकती, उसे तो किसी-न-किसी रीति से पालना ही है पर कैसे चला पायेगी मजबूरी की गाड़ी को ? बहनों तुम उठा सकती हो यह बीड़ा, क्या तुम्हारे मन में इनके प्रति कोई करुणा नहीं जाग्रत होती यह सब तो अपने को बन्धन व दायरे में बंधा हुआ महसूस कर रही है, पर तुम तो निर्बन्धन हो तुम्हें क्यों ख्याल नहीं आता, कि ये जंग हमारी भी है इनके अन्याय से हम लड़ेंगे, बहनों अन्याय करना जितना बड़ा अपराध है! अन्याय सहन करना उससे भी बड़ा अपराध है यह अन्याय को बढ़ावा देना है तुम्हारे सामने किसी लाचार, बेबस पर अत्याचार होता रहे और तुम चुपचाप देखती रहोगी, अपनी माँ बहनों पर हो रहे अत्याचार को तुम्हारे सिवाए कोई और नहीं समझ सकता इसलिए अब कोमलता व नाजुकता के काली सुरंग से बाहर निकलो, जाग्रत करो अपनी सुषुप्त शक्तियों को, उतार फेंको अबला के ठप्पे को और दिखा दो अपना असली रूप, जिससे दहल उठे संसार, भयभीत हो जाये आतंकी, तुम कब तक सोती रहोगी और कब तक मुंह मोड़ती रहोगी और कब तक भागती रहोगी इन सच्चाईयों से अगर तुम घूम कर खड़ी नहीं होगी तो यह एक दिन तुम्हें भी अपनी चपेट में लेने वाली हैं। सुरसा के मुंह की तरह फैली ये विकृतियाँ किसी को छोड़ने वाली नहीं, अगर इनको रोका नहीं गया तो पूरा ही हप कर जायेगी, इसलिए बहनों अब गफलत मत करो, जागो और जगाओ अपने स्वमान को, कहीं देर न हो जाये। संसार जल रहा है, मानवता चीख रही है, नैतिकता तड़फ रही है, आध्यात्मिकता अन्तिम सांसे ले रही है, समाज दहक रहा है और तुम कहाँ फैशन में व्यस्त हो, जबान के टेस्ट में मस्त हो, कहाँ शोर शराबे की पार्टियों में त्रस्त हो रही हो ? फैशन की आंधी में क्यों अपनी असली सुन्दरता को उड़ा दे रही हो ? असली सुन्दरता को तो छोड़ और ही मुसीबतों को दावत दे रही हो ? जबान के स्वाद में नित् नई बीमारियों को बुला रही हो और देर रात तक चलने वाली पार्टियों में आधुनिकता का लिबास पहन हो हल्ला मचाते नित् नये खतरों को तैयार कर रहे हैं ? जिन खौफनाक खतरों से पार पाना संभव ही नहीं। उनमें खत्म हो जाना होता है इसलिए मेरी

बहनों, एक बार इस मायावी चम्बे से बाहर निकल कर तो देखो। करने को जिन्दगी में बहुत कुछ है, करिश्मा या कारनामा न भी करो पर करने योग्य कर्म तो अवश्य करो।

समय की बेवसी, वक्त की पुकार, प्रकृति की चेतावनी, माया की चुनौती, भगवान का आह्वान तुम्हें सचेत कर रहा है कि रूकना ठीक नहीं, तुम्हें कुछ करना ही होगा। छोड़ो गलतफहमियाँ, मौज मस्तियां, अब समय है अपनी शक्ति को सार्वजनिक करने का, अन्याय का सामना करने का, चेतावनी को चुनौती देने का, ध्वस्त कर दो हर बुराई के बीज को, परास्त करो हर उस दुश्मन को जो रास्ते का रोड़ा बना हुआ है, बहादुरी व पराक्रम का मूल्यांकन कर्मक्षेत्र एवं युद्ध क्षेत्र में ही होता है। चलो समर के बीच कूद पड़ो रणभूमि में, तुम्हें अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी, विजय भी तुम्हारी ही होगी, वह बचकर तुमसे कहीं नहीं जा सकती क्योंकि कलयुग के अन्त में जब चारों और माया का बोल बाला हो, पाप सिर पर चढ़कर बोल रहा हो, बुराइयों का हर मन पर संपूर्ण आधिपत्य हो गया हो, भक्ति सिर्फ आड़म्बरों व कर्मकाण्डों में उलझकर दिखावे मात्र रह गयी है। जब सच्चाई बेइमानी लग रही हो, आधुनिकता भौतिकता हर दिल की गहराई में उतर गई हो, आध्यात्मिकता जहाँ दीनता व असहायों का हथियार माना जाने लगा हो, वहाँ पर कुमारी की पूजा होती हो, सौ ब्राह्मणों से उत्तम एक कुमारी का गायन हो, हर काम की शुरुवात पवित्र कन्या से करवाना, जहाँ शुभ माना जाता हो, तो सोचो कन्या कितनी शक्तिशाली होगी, कितनी वैल्युबुल हो, परन्तु हाय तुम नहीं जानती कि तुम क्या हो ? काश हीरे को अपनी वैल्यु का पता होता, बहनों अपनी अपार उर्जा को पहचानों, अपनी विशेषताओं का मूल्यांकन खुद करो, समझो अपनी योग्यताओं को, तुम साधारण नहीं हो, तुम शक्ति का अवतार हो, उर्जा का रूप हो, तुम्हारे साथ स्वयं भगवान है, उसने बहनों पर विश्वास करके विश्व-परिवर्तन का कार्य दिया है। भगवान जानी जाननहार है, तुम यह काम कर सकती हो, तुममें वह शक्ति है भगवान ने पहचान करके ही आह्वान किया है लेकिन तुम्हारा मन इस मायावी नगरी की चकाचौंध में चक्कर न खा जाये। तुम्हें सैकड़ों प्रलोभन देने आयेंगे पर तुम्हें वास्तविकता पता करनी होगी। कहीं मुम्बई माया नगरी का आकर्षण खीचेंगा, परन्तु उसकी सच्चाई जान लो, पैसा व शोहरत अच्छी बात है परन्तु चरित्र व सदाचार से बढ़कर कुछ नहीं, ऐसे पैसे व पद को लात मार मुंह मोड़ लेना चाहिए। शोहरत मिले न मिले पर शोहबत ठीक होनी चाहिए, धन हो या न हो पर चैन हो। मदर टेरेसा की पहचान विश्व के कोने-कोने में बच्चे-बच्चे की जुबान पर है उन्होंने किसी कपड़े व प्रदर्शन से नाम नहीं कमाया करुणा ओर दया रूपी गुणों से सारे विश्व में ममता का डंका बजा दिया। गार्गी, पन्ना धाय, अपाला, दुर्गावती, लक्ष्मीबाई, जीजाबाई, मीरा ये भी तो नारियां ही थी सैकड़ों वर्षों बाद भी आज इनकी छवि धूमिल नहीं हुई। एक्ट्रेसेस का जमाना केवल दो-चार वर्षों का होता है वह भी सभी लोग उनको किस नज़रिये से देखते हैं और उनसे आगे लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा ये भी तो नारियाँ ही थी जिन्हों ने अनेक गंदे मन को स्वच्छ बना दिया, उनकी शालीनता देखिये, कोई कपड़ों के आधार पर उनकी सुन्दरता

नहीं मापी गयी। हजारों साल बाद भी इनकी सुन्दरता कायम है। इनकी तरफ एक बार नज़र घुमा के तो देखो तुम्हारा मन भी सुन्दर हो जायेगा। सुन्दरता तो मन की होती है अगर कोई बहुत सुन्दर मुखाकृति वाला हो पर उसका व्यवहार अच्छा न हो तो उसके नज़दीक कोई नहीं जाना चाहता, उसे कोई सुन्दर नहीं कहता। ऐसी सुन्दर बनो जिसकी सुन्दरता सदियों तलक चलें।

दूसरा आकर्षण - धन का। इसकी चमक भी कम नहीं है। इसकी चकाचौंध तो आकण्ठ तक भी धन से सराबोर होने पर सन्तुष्टता नहीं और जहाँ सन्तोष नहीं वहाँ सुख कहाँ। धन कमाना कोई बुरी बात नहीं। धन के बिना हमारा जीवन ठीक तरीके से सुचारु रूप से नहीं चल पाता परन्तु धन की लालसा एक नया दलदल बनाता है। जिससे निकलना सम्भव ही नहीं पर नामुमकिन होता है। लक्ष्मी, धन की देवी मानी गयी है। धन कमाने वाले भाई लोग उनसे धन की याचना करते हैं परन्तु वह कोई नौकरी तो करती नहीं थी, कुबेर को धन का देवता कहा जाता है वह कोई नौकरी तो नहीं करते थे, यहाँ किसी ने कितना भी धन कमाया हो पर किसी और को भी धन की प्राप्ति कराये, ऐसा नहीं होता है। पर धन की देवी के लिए तो सभी मानते हैं कि वह दूसरों को भी धनवान बनाती है। क्यों नहीं तुम भी ऐसा धनी बनो जो कभी कम ही न पड़े। दूसरों को भी सम्पन्न बना दो इसलिए बहनों भगवान के आह्वान को तुरंत और सहर्ष स्वीकार कर आ जाओ मैदान-ए-जंग में। कन्या सौ ब्राह्मणों से उत्तम कहलाती है लेकिन कन्या माना पवित्र, वह कन्या ब्रह्माकन्या है जो भगवान बनाता है जिसे ब्रह्माकुमारी कहते हैं इसलिए बहनों चलो भगवान की मत पर, तुम अपना तो क्या सारे विश्व का उद्धार कर सकती हो, खुशी का निर्मल-निर्झर झरना बन अनेकों को खुशी से सराबोर कर सकती हो, पावनता की बहती नदी बन, अनेकों के पाप धो सकती हो। प्रकाश का स्तम्भ बन अनेकों का तिमिर हर जीवन को रोशनमय कर सकती हो। ऊर्जा का प्रतिबिम्ब बन अनेक बुझते दीपों को शक्ति की एक किरण दे सकती हो, शान्ति का अनन्त श्रोत बन हर मन को सच्ची शान्ति दे सकोगी। गुणों की गरिमा से सम्पन्न बन अनेकों जीवन में जीवंत खुशबू भर सकोगी। करुणा और दया की प्रतिमूर्ति बन उनके निखरते जीवन को सद्मार्ग का रास्ता दे सकोगी। शीतलता की निश्चल चांदनी बन अनेकों के तपते मन को राहत-रूह दे सकोगी। प्रेम का विमलसिन्धु बन अनेकों तड़फते एवं तरसते दिलों को स्नेहिल छांव दे सकोगी। क्या तुम्हें ऐसा जीवन पसंद है या फिर शादी कर सिर्फ एक व्यक्ति के पल्लू से बंध कर उसके चरणों की दासी बनकर हर उल्टी-सीधी बात को हाँजी हाँजी कर स्वीकार कर उसकी भक्ति (सेवा) में लगे रहना या फिर शेरनी बन अपनी बुराइयों का तो दमन कर पावन बन अनेकों को भी बुराइयों से मुक्त करने में उनका मार्गदर्शक बनना अच्छा है! क्यों किसी गुलामी की जंजीरों में स्वयं को जकड़ना, स्वच्छंद हो अपनी उर्जा को सर्व के हित सदुपयोग करना, न कि अपनी मुक्ति के लिए समाज या सरकार या भगवान से फरियाद करना। भगवान भी फरियाद से छुड़ाने आया है वह अपनी सारी शक्तियाँ देकर अपने जैसा सर्वशक्तिमान बनाकर विश्व नव-निर्माण के कार्य में सहयोगी बना फिर अधिकारी बनाने आया है। क्या उसकी यह पेशकश तुम्हें स्वीकार नहीं। तुम्हारे सामने ये रास्ता भी स्पष्ट है फैसला तुम्हें करना है, तुम अपनी जिन्दगी को कोहिनूर बनाना चाहती हो या बेनूर ?

# इमारत बी.के. जीवन की

- बी.के.सुमन, अलीगंज, लखनऊ

विश्वकर्मा ने विश्व का नव निर्माण कितनी कला के साथ किया था, जहाँ सर्व सुखों व शान्ति का सम्पूर्ण समावेश था विश्व का आधार इतना मजबूत था कि २५०० वर्षों में एक दरार भी नहीं पड़ी, न हीं कुछ सीलन या प्लास्टर झड़ने की शिकायत हुई, सुखदाई भवन जीवन का सुख देते थे, लेकिन द्वापर से फिर हमने सिर्फ मैटेरियल के घर बनाये जो एक मकान के सिवाए और कुछ नहीं बने, घर तो कभी लगे ही नहीं। पहले जमाने में लोग शिफ्ट वाइज मकान मनाते थे, बिना कोई मैप के जब जितनी सुविधा हुई, जितनी आवश्यकता हुई एक छत डाल दी, इसलिए वह मकान न तो प्राकृतिक आपदाओं को झेल पाते थे न ही दीर्घकालीन होते थे, देखने में कोई लुक आता ही नहीं था। पिलर्स पर तो मकान कभी बनाने का सोचा ही नहीं लेकिन जैसे-जैसे विज्ञान ने तरक्की की वैसे-वैसे उसका उपयोग इमारतें बनाने में भरपूर करने लगे। आज तो मकान बनाने से पहले ही सोइल टेस्टिंग होती है, फिर कितनी गहराई से कितनी मोटी सरिया कितनी चौड़ाई के कॉलम होने चाहिए यह सब पहले से ही निर्धारित हो जाता है। मकान का एलीवेशन कैसा होगा, पहले ही देख सकते हैं जिसके कारण मकान भूकम्प रोधी बनाने में सफल हुए और जीवन मकान में नहीं घर में सुखी चलने लगा। इसी प्रकार हमें अपने जीवन की इमारत भी फुलप्रूफ बनाना चाहिए, पहले सोल टेस्टिंग करके अवश्य देख लेना चाहिए जिससे सहज ही यह पता हो सके कि इस पर कितने मंजिल की बिल्डिंग बनाई जा सकती है।

बी.के.जीवन की इमारत का भी पहले लक्ष्य रूपी मैप बनाना चाहिए फिर सिद्धांत रूपी पिलर्स पर जीवन की इमारत बनाना शुरू करना चाहिए जिससे किसी के भी प्रकृति (स्वभाव) रूपी परिस्थिति को झेलकर भी अचल-अडोल स्थिति बनी रहेगी। निश्चय की सीमेन्ट, विश्वास का मौरंम, कल्पना की वालू, स्नेह का पानी लेकर मनन-चिन्तन के फावड़े से मिक्स कर विचारों की ईटों को चिनाई करते ड्रामा की दीवार बनानी है लेकिन उसके पहले सच्चाई की गिट्टी हर पिलर्स के नीचे गम्भीरता रूपी दुर्मुट से अच्छी तरह से सेट कर देना चाहिए। एक काम और सिद्धांत रूपी पिलर्स को प्लीन्थ लेबल पर

लाकर प्रतिज्ञा रूपी विम में योग रूपी सीलन प्रूफ पाउडर मिलाकर धीरज की साइडें लगाकर ढलाई कर देना चाहिए। धीरे-धीरे दीवारों को ऊंचा करते-करते परिवर्तन की सटरिंग में आधार स्वरूप के स्वमान की वल्लियां उद्धार स्वरूप की फंटियों पर मर्यादा की कीलें जड़कर सटरिंग सेट करनी होगी जिस पर दृढ़ता की सरिया में श्रीमत का तार बांध कर जाल बनाना है जिस पर सन्तुष्टता की छत डालनी है। साथ-साथ नथिंग न्यू के डाऊन पाइप भी साथ-साथ लगाते जाना है मास्टर सर्वशक्तिवान स्वमान की वायरिंग भी साथ-साथ लगानी है। और नथिंग न्यू डाउन पाइप के ऊपर निर्मानता की जाली अवश्य लगानी होगी। छत के ऊपर अटेन्शन रूपी मुर्गा जाली डालकर, हिम्मत का प्लास्टर लगाना है जिस पर धारणा की सफेदी करवानी है। जिस पर नम्रता का प्राइमर लगाकर हर्षितमुखता की विरलापुट्टी लगाकर मुरली रूपी ब्रश से परमात्म संग का रंग लगाना चाहिए। क्षमा भाव की खिड़की, सद् भाव के दरवाज़े में सी नो इविल के पल्ले लगाकर, त्रिकालदर्शीपने के पंखें लगाकर, पवित्रता की लाइट लगाकर, गुणों से सजावट कर देनी चाहिए। सबका पार्ट फिक्स है रूपी एक्झास्ट फैन लगाना चाहिए। मधुरता रूपी वेन्टीलेटर लगाकर रोशनी व हवा आने का पूरा प्रबन्ध करना है।

यथार्थ के फर्श पर सरलता का टाइल्स लगाना है। खुशी रूपी रूम फ्रेशनर एवं प्रेम की अगरबत्ती सदा लगाकर हर आने जाने वाले को खुशबू से सराबोर करते रहना है। हाँ, शुभ भावना की बेल जरुर लगानी है। जगह-जगह सहनशीलता के गमले रखकर करुणा के पौधे लगाकर सारे घर में एडजेस्टींग की ऑक्सीजन फैलाते रहना है। अगर कहीं नीरसता की सीलन आ भी जाये तो चेकिंग व चार्ट रूपी मसाले से रिपेयर कर देना चाहिए। अगर कहीं संस्कारों के टकराव की दरारें पड़ने लगे तो तुरंत कम्युनिकेशन रूपी पुटीन भरना शुरू कर देना चाहिए। अगर ऐसे इमारत बनाये तो वर्तमान जीवन तो सुखदाई होगा ही, भविष्य में 21 मंजिल की इमारत भी अच्छे-ते-अच्छी बनेगी, जिससे सम्पूर्ण खुशी व सुख सम्पन जीवन निर्विघ्न निकष्टक चलेगा। न टपकने की चिन्ता न गिरने का भय, पर ऐसी इमारत सिर्फ विश्वकर्मा की निगरानी में ही बनाई जा सकती है। तो मेरे प्रिय भाईयों एवं बहनों क्या आप अपनी बी.के.जीवन की इमारत कुछ ऐसी ही बनाना चाहेंगे, अगर हाँ, तो चलो बी.के.सेन्टर पर जहाँ सब टेस्टिंग करके विश्व नव-निर्माण करने आये विश्व कर्मा आपसे ऐसी इमारत बनाने में गाइड करते रहेंगे। ओमशान्ति।

# ग्रामीण युवा आध्यात्मिक सशक्तिकरण

- बी.के.सुमन, अलीगंज, लखनऊ

हे धरती पुत्रों, सबके पालक, दाता, हे ग्राम्य देवता के वासी जरा याद करो तुम कहाँ पैदा हुए हो? जहाँ गांधी जी पैदा हुए, भगत सिंह पैदा हुए, रानी लक्ष्मीबाई पैदा हुई, ऐसे ग्राम देव तुम्हारा आलय है, जरा पहचान लो आपने आपको, तुम वहाँ के रहवासी हो, जहाँ शीतल हवाएं लोरियां सुनाती है, ठंडा जल, तन-मन-दिल-दिमाग को शीतलता के साथ राहत देता है। हरी सब्जियां, ताजेफल स्वास्थ्य का उपहार प्रदान करते है, गाय का ताजा मीठा दूध बुद्धि के विकास के साथ उमंग उत्साह की शारीरिक स्फूर्ति भी प्रदान करता है। पेड़ों की ठंडी छाया हर पथिक के लिए अनमोल औषधि का काम करती है। मेरे प्रिय युवा भाइयों उठो जागो और जगाओ अपने स्वमान को, तुम्हें वह मिला है जिसके लिए आज बड़े बड़े लोग भी तरसते है। तुम वह काम कर सकते हो, जो दुनिया का कोई भी पद वाला व्यक्ति वह काम नहीं कर सकता। तुम सबका जीवन चलाते हो, तुमसे दुनिया चलती है। तुम यह क्यों सोचते हो? कि मैं साधारण गाँव के साधारण किसान का बेटा थोड़ी-सी शिक्षा लेकर क्या कर सकता हूँ? भाइयों अब्दुल कलाम, अब्राहम लिंकन, भगत सिंह, लक्ष्मी बाई यह लोग भी साधारण ग्रामीण क्षेत्र से निकले और इनमें से कईयों ने सैकडों वर्षों के अंग्रेजी साम्राज्य को न सिर्फ हिला दिया बल्कि भारत को आजाद कर देशवासियों को मुक्त मगन उन्मुक्त धरा दी, इनमें से एक भारत का राष्ट्रपति बना एक अमेरिका का राष्ट्रपति बना, इसलिए अगर कुछ कर गुजरने का जजबा है तो लहरें भी साहिल पर पहुंचाने में मददगार साबित हो जाती है भाइयों उतार फेंको बुजदिली व दिलशिकस्ती की चादर, और दिखाओ अपनी जिन्दादिली का आगाज, तुम किसी से कम नहीं हो, दुनिया में किसी ने कितना बड़ा काम चाहे क्यों न किया हो पर उसके पास उतना ही दिमाग है जितना तुम्हारे पास, सिर्फ उसने अपने दिमाग को जगा लिया है, अपनी शक्तियों को पहचान कर उनको काम में लगा लिया और तुम सिर्फ सोच रहे हो। अपनी शक्तियों को या तो बन्द करके रख दिये हो या फिर तुम्हें अपनी क्षमता का अन्दाज ही नहीं। भाइयों तुम खुद उर्जा का प्रचण्ड रूप हो, हार्ड वर्क का पर्याय हो, तुम अदम्य साहस का प्रारूप हो, हिम्मत का दीप, उत्साह का धनी, परिवर्तन का आगाज, सृजनशीलता का प्रतिबिम्ब, निर्माणता का दर्पण, तुम्हें और किसी वैशाखी की जरूरत नहीं। तुम भारत का भविष्य हो, पहचानो अपने आपको, तुम अपनी ही नहीं सारे गाँव की तस्वीर बदल सकते हो। खोखले इरादे, बेकायदे के धन्धे, आधार हीन स्वप्न, उद्येश्य विहीन कार्य, विवेकहीन संग, निश्चित पतन का द्वार है जो आज नही तो कल गर्त में भेजेगा ही। साधन हीन गाँव का हवाला देकर मेरे भाई अपनी जिम्मेदारियों से मत भागो। एक लकड़हारा छोटी-सी कुल्हाड़ी से एक बड़े से बड़े पेड को धारासाई कर देता है। यह ताकत कुल्हाडी की नहीं वरन् उसकी है जिसने अपनी बुद्धि से अनवरत वार करके फतह हासिल की। एक छोटी-सी हथौड़ी बड़ी-सी बड़ी दीवार को मटियामेट कर देती है यह ताकत हथौड़ी की नहीं उस व्यक्ति की है जिसने बिना हिम्मत हारे लगातार चलाने की इच्छा शक्ति को कायम रख विजय प्राप्त की। मेरे ग्रामीण भाईयों क्या ये सब तुम्हारे पास नहीं है? तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि नौकरी करते ही कोई जादुई चिराग तुम्हारे हाथ लग जायेगा जिससे कई जीवन खुशहाली से प्रकाशित हो जायेंगे। तुम्हें और किसका इन्तजार है कि कोई मसीहा आयेगा और तुम्हारे लिए जन्नत का दरवाजा खोल देगा, मेरे युवा भाईयों जब सुभाषचन्द्र बोस ने विदेश में आई.सी.एस की परीक्षा पास की, तो वहां के एक बड़े पदासीन व्यक्ति ने उन्हें अच्छी नौकरी का ऑफर किया, तो उन्होंने साफ मना कर दिया और कहा कि मै अपने देश की सेवा करूंगा। तब उसने कहा कि तुम खाओगे क्या ? उन्होंने बड़े गर्व से कहा कि मेरा पेट तो दो आने मे भर जायेगा और दो आने तो मैं कमा ही लूंगा, पर सबसे पहली देश सेवा, मातृभूमि से अच्छा, ऊंचा कुछ भी नहीं। तुम गांव से पलायन क्यों करना चाहते हो? किसी ने पैदा किया तुमने खाया इससे कहीं अच्छा है तुम पैदा करो औरों को खिलाओ। यह प्रतिज्ञा कर लो कि मैं अपने समाज को अच्छा अन्न उगा कर दूंगा, समाज को बीमारी से मुक्त करूंगा, अन्धाधुन्ध रासायनिक खादों, जहरीली कृषि रक्षक दवाईयों का प्रयोग करके, अन्न को हम लगातार जहरीला बना रहे है। जिससे दिनोंदिन बीमारियाँ बढ़ती जा रही है। बढ़ती आबादी, चढ़ती महंगाई, भुखमरी, भ्रष्टाचार के बारे में मेरे भाई कुछ तो सोचो, उठाओ ये पान का बीड़ा और कह दो उन सब नौजवानों से जो निराशा की अन्धेरी सुरंग में भटक कर, शहरी चकाचौंध की आकर्षण में भागे जा रहे है। सुख वहाँ नहीं है जहाँ वे जा रहे है, सुख वहाँ है जिसे वे छोड़ने के तट पर खड़े है। जब भी कोई अपना भाग्य देखने के लिए कहता है तो वह व्यक्ति क्या देखता है? उसके हाथ। इसका मतलब? हमारा भाग्य हमारे हाथ

में हैं, हाथ कार्य का प्रतीक है अर्थात अपने कर्म से हम अपना भाग्य बनाते है वा बना सकते है। नौकर तो नौकर ही है मजदूरी चाहे छोटी हो, चाहे बड़ी, उसमें वह राजाई का सुख कहाँ? जो अपने कार्य में है। बड़े से बड़ी नौकरी करनेवाला नौकर ही कहलाता है, जबकि खेती करने वाला जमींदार, लैन्ड लार्ड कहलाता है फिर भी अगर तुम्हें लगता है कि मेरे पास कुछ नहीं है, तो हम तुम्हें छः इन्जेक्शन दे रहे है। अगर ये लगालो तो सारा संसार जीत जाओगे। सोचो महात्मा गांधी ने सिर्फ दो गुण सत्य और अहिंसा के बल से सारे संसार सहित दुश्मनों का भी दिल जीत लिया। भारत के राष्ट्र पिता बन गये मदर टेरेसा ने करुणा दया रूपी अचूक शस्त्रों से भारत सहित समस्त विश्व की हृदय सम्राट बन गयी। एक कुमारी सब की माँ बन गयी। वह छः इन्जेक्शन है :–

**1. कड़ी मेहनत :** इसका कोई विकल्प नहीं, मेहनत किसी की भी कभी भी निष्फल नहीं जाती। बशर्ते मेहनत विवेक युक्त की जाये। खेती सिर्फ मेहनत चाहती है वह खेत सोना उगलने के लिए आज भी तैयार है। हां विवेक के साथ श्रेष्ठ संवेदनायें भी प्रेषित की जाये तो खेती मां का रूप धारण कर सब कुछ न्योछावर करने के लिए आज भी तैयार है।

**2. अटूट हिम्मत :** हाँ, कई बार प्राकृतिक आपदायें खेती को भारी क्षति पहुंचाती हैं। परन्तु प्रकृति को समझ उस अनुसार फसल का चयन करना होगा। हिम्मत सफलता का दूसरा रूप है यह एक प्रकार से सफलता में सीमेन्ट का काम करती है। चींटी को देखो जो अपने से 50 गुणा अधिक भार उठाती है। सतत् प्रयासरत रहती कभी हिम्मत नही हारती, 50 बार असफल होने के बाद भी पुनः उसी उत्साह से प्रयास करती है और एक दिन सफल होती है। तुम तो सर्व श्रेष्ठ प्राणी हो।

**3. सहयोग**: सहयोग संगठन की डोर है। संगठन बड़े से बड़े कार्य को सहज ही संपन्न करने की क्षमता रखता है। गाँव के बहुत से कार्य ऐसे है जिनमें संगठन की आवश्यकता है। जिनकी जितनी क्षमता उतना सहयोग ईमानदारी से करें, निश्चित ही बड़े सहयोग के लिए तुम रास्ता तैयार कर रहे हो। कबूतरों की कहानी पता है ना सबने एक साथ सहयोग किया तो वे शिकारी का पूरा जाल ही लेकर उड़ गये।

**4. सदाचार :** अर्थात सच्चा एवं श्रेष्ठ आचरण। कहा गया है कि व्यक्ति के पहचान उसके बोल नहीं उसके कर्म कराते है। चरित्र वह खुशबू है जो हर किसी के जीवन को गंदगी के बीच में भी महका देती हैं। कुछ और सीखें या न सीखें पर सच्चाई-ईमानदारी जरूर सीख लें। आज भी लोग खुद चाहे कैसे भी हो, परन्तु हर एक अपना साथी सदाचारी ही चाहता है। किसी से चाहे थोड़ा ही संपर्क हो, पर झूठे बेईमान, भ्रष्टाचारी के साथ संबंध बुरे से बुरा व्यक्ति भी नहीं रखना चाहता। सत्य को परीक्षा तो देनी पड़ती है पर सत्य पराजित कभी नहीं होता। परिश्रम पराजय को भी विजय में बदल देगी।

**5. सात्विकता :** श्रेष्ठ मन ही श्रेष्ठ जीवन का आधार है श्रेष्ठ मन सात्विकता ही दे सकती है। कहा गया हैं 75% असर हमारे मन पर हमारे भोजन का होता है और जैसा अन्न वैसा मन वैसा फिर जीवन बनता चला जाता है। व्यसन कोई भी हो, यह वह कैंची है जो सभी संबंधों को काट कर रख देती है। व्यसन एक घुन है जो धीरे धीरे शरीर को खत्म कर के ही छोड़ता है। प्रकृति ने खाने के लिए हर मौसम में शरीर को जो चाहिए वह उपलब्ध कराती है। फिर भी न खाने योग्य चीज खाकर न सिर्फ स्वयं को मौत के हवाले करते है बल्कि समाज को भी एक संक्रामक रोग दे जाते है।

**6. परमात्मा की याद :** हर बात का जवाब, हर कर्म की सफलता, हर बीमारी का इलाज, सर्व गुणों का स्रोत, सर्व शक्तियों का सागर, हर खुशी का खजाना, गरीब नवाज, सबका मसीहा, सबका तारनहार वह परमात्मा हमारा पिता है हम उसकी सन्तान, उसकी हर चीज के हम वारिस है। वह हमारा है हमें खुशी देने के लिए सुखमय संसार बनाने आया है। जरा उसे याद करके तो देखो खुशी के साथ कारून का खजाना भी हाथ लग जायेगा।

हर मंजिल दस्तक देती है, पुरुषार्थ की उत्तम रेखा पर,
तकदीर स्वयं बदलती है, सतकर्मों की अभिलेखा पर।
नही शेर कभी ढूंढा करते, पदचिन्हों में अपने पथ को,
जांबांज नहीं मांगा करते, कभी किसी की रहमत को।

**ओम्शान्ति**

# व्यसनमुक्त जीवन

- बी.के.सुमन, अलीगंज, लखनऊ

सुन्दर मन, स्वस्थ शरीर, नेक इरादे, बुलन्द हौंसले, स्वर्णिम भविष्य, कुछ कर गुजरने का जज्बा, आसमान छूने की तमन्ना, हवाओं का रुख मोड़ने की ताकत, तूफानों को शान्त कर देने की हिम्मत, सफलता के शिखर पर पहुंचने का उत्साह, प्रबल पुरुषार्थ की दृढ़ता, सुनहरे स्वप्न उत्तम विचारों का धनी युवा जीवन, खुशहाली का पर्याय कहा जा सकता है, परन्तु दिशाहीन पथ मिल जाने से सर्वनाश की कगार पर खड़ा युवा या तो रियलाइज नहीं करता या रियलाइज करने के बाद मौत को गले लगा लेता है, कारण? गलती किसकी? भूल कहाँ हुई? यह गुस्ताखी कौन कर रहा है? जो भारत के शिल्पकार हैं वह अपने जीवन को नहीं चला पा रहे हैं। निराशा के बादलों में प्रचण्ड सूर्य क्यों छिप गया है? जरा सोचो, उत्तम जीवन का उपहार लेकर खौफनाख जिन्दगी से क्यों खेल रहे हैं? पढ़ने लिखने की उम्र में रंगी-बिरंगी चमकती पुड़ियों में कैद होता विद्यार्थी, धुएं के छल्ले बनाने में रत किशोर, ड्रग चरस शराब की बोतल में बंद युवा, बूढ़ों व मजबूरों की मजबूत लाठी बनने के बजाए चलने-फिरने को मजबूर, बच्चों का आदर्श बनने के बजाए अराजकता का प्रारूप बनकर भयावह व खौफनाक बनकर आज युवा बेखौफ होकर घूम रहा है। कौन बचा पायेगा इन्हें? कैसे बचा पायेगा कोई भारत की इस युवा पीढ़ी को? कहाँ है इसकी बीमार मानसिकता का इलाज? कौन बनेगा इनका रहनुमा, जो दिखायेगा इन्हें खुशियों का जहाँ, कौन करेगा इनका कायाकल्प, जिसे मिल जाये इन्हें मुकम्मल आसियाँ?

**दोषी कौन -** पहले तो माँ-बाप व लालची समाज को दोषी माना जा सकता है। माँ-बाप कई व्यसनों के आदी होते हैं और ये चीजें दुकानों से प्राय: लोग बच्चों से न सिर्फ मंगवाते हैं बल्कि उनके सामने ही खाते हैं। पान खाने वाले का लाल-लाल मुंह देखकर बच्चा आकर्षित होता है, बीड़ी या सिगरेट पीने वाले के मुंह से धुंआ निकलता देख एक किशोर वण्डर खाता है और बुजुर्गों को हुक्का पीते देख, उसकी गुड़गुड़ाहट सुन खुद भी वैसा करने को लालायित होते हैं। फिर पीछे-पीछे यह सब करने की दबी इच्छाओं को पूरा करने की चोरी करना शुरू कर देते हैं। कई बार लोग गांव में मेहमान के आने पन इन्हीं से स्वागत करते हैं। खुद का ऐसा स्वागत न करने पर शिकायत भी करते हैं कि वह तो एक बीड़ी भी नहीं पूछता। नशा सेवन करने का **दूसरा कारण,** बच्चा घर में पिता जी को पीता देखता , मेहमानों को, स्कूल में शिक्षक को, कभी-कभी साथियों को भी इसका सेवन करते देखता है, तो वह समझता है कि यह जरूर कोई अच्छी चीज है जो सभी लोग इसका सेवन करते हैं। वह भी करने का पूरा मन बना लेता है। नशे की लत का **तीसरा कारण** बड़े-बड़े होर्डिंग। बड़े ही आकर्षक ढंग से चौराहों पर, युवाओं को भ्रमित करने के लिए बड़ी-बड़ी होर्डिंग ऐजेन्सियाँ लगाती है। जिसमें ये स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है ये चेतावनी बड़े ही छोटे अक्षरों में लिखी होती है पर जर्दा खाने का शाही इन्दाज बड़े ही मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा होता है। शाही पोज के साथ, शराब पीने वालों के ऊर्जावान व्यक्तित्व को हर मंजिल मिलती दिखाई जाती है, जिसके आकर्षण में आकर युवा फंस जाता है जिसके बाद निकलना मुश्किल हो जाता है। **चौथा कारण** गांव में छोटे-छोटे बच्चों को मशाला खिलाने का लालच देकर उनसे लोग बहुत कम पैसे में जरूरत से ज्यादा काम लेते हैं। पहले उन्हें आदी बना देते हैं फिर वह मजबूर हो जाते हैं। अपने काम के लालच में मासूम बच्चों की जिन्दगी दांव पर लगाते हं। **पांचवा कारण** माँ बाप की नासमझी। एक बार एक बहन बस में मसाला खाकर थोड़ा-सा मसाला अपने डेढ़ साल के बच्चे के मुंह में भी डालती है, बच्चा उछलने लगता है, बगल में बैठी बहन जब उससे बच्चे को मसाला न खिलाने के

बारे में बोली तो कहने लगी जब हम खाते हैं तो वह पुड़िया पकड़ने लगता है। थोड़ासा खिला देने पर यह खुश हो जाता है। एक जगह तीन बच्चे करीब 8-9 वर्ष के भैंसे चरा रहे थे थोड़ी देर में उन्हें बीड़ी पीते देख, हमने उनके पास जाकर पूछा तुम बीड़ी क्यों पीते हो? तुम्हें यह कहाँ मिली? पास में ही एक बूढ़े दादा ने कहा मैंने इन्हें दिया है। मैं जब भी बीड़ी पीता हूँ, यह भी मांगने लगते हैं तो जब थोड़ी सी रह जाती है तो मैं इनको दे देता हूँ। हाय नासमझी, बच्चों को तो नासमझ कहेंगे पर बूढ़े भी बच्चों माफिक ही चल रहे हैं। शरीर के विकास के पहले ही उसमें आग की ज्वाला भड़का रहे हैं। बच्चे युवा होते-होते अपने शरीर को ढो पाने में मजबूर होंगे। तो परिवार व समाज का कर्ज क्या चुकायेंगे। **छठा कारण** हमने सुना है गांव में तम्बाकू पीते थे तो पहले-पहले पीने में शायद इतना अच्छा टेस्ट नहीं आता होगा इसलिए बच्चों से शुरू करने के लिए कहते थे, धीरे-धीरे बच्चों की यह आज्ञाकारिता कब आदत बनकर लत में बदल गयी उसे पता ही नही पड़ता, पता तब लगता है जब यह शरीर और मन को पीने लगती है। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। गांव जो सबको पालता है, गांव की फसल को खरीदकर बेचने वाले अमीर व सुखी बन जाते हैं जबकि किसान को दो गुना भी फायदा नहीं मिलता, जबकि किसान को धरती एक का सौगुना से भी अधिक रिटर्न करने के बावजूद आज किसान गरीब व कृषि करना हेय दृष्टि से देखा जाता है। उसका एक मुख्य कारण यह भी हो सकता है कि किसान भाईयों को लोग जैसे व्यसनों का पयार्य मानते हैं। **छठा कारण** युवा पीढ़ी महंगी शराब पीना व महंगी सिगरेट पीना अपनी ऊँची शान समझते हैं। शौकिया ही यह आदत डाल लेते हैं, नशे की आदत पहले तो स्वर्गिक नजारे दिखाती है लेकिन फिर जब नशा नहीं मिलता तो किसी भी नर्क की यातना से कम यातना नहीं होती है, दु:ख भी उतना होता है।

**नशे से सर्वनाश:-** किसी चीज से कोई नुकसान, किसी से कुछ नुकसान परन्तु किसी भी प्रकार का नशा थोड़े दिनों में सर्वनाश का कारण बन जाता है। तन बर्बाद, मन परेशान, धन बर्बाद, समय बर्बाद सुख शान्ति का नाश, परिवार परेशान, समाज परेशान अर्थात पूरा जीवन ही सत्यानाश हो जाता है। जीवन कर्जदार व परिवार कलहदार बनता चला जाता है। शुरुआत तो खुशी की तलाश में होती है परन्तु खुशी ही दूर होती चली जाती है। सम्बन्धों में कडुवाहट बढ़ती जाती है, जिससे जीवन दर-बदर होता चला जाता है। फिर लास्ट में नशा जीवन को ही नाश कर डालता है। पहले जो आदत डलवाता है वह ठगता है, बाद में नशा उसे ठगता है। व्यक्ति समझता है मैं नशे को पी रहा हूँ उसका आनन्द ले रहा हूँ पर वस्तुत: पी तो नशा ही रहा होता है और पता भी नहीं पड़ने देता है, हमारे सेन्टर के बगल वाले एक युवा भाई एक व्यक्ति को लेकर सेन्टर पर आये हमने उससे आने का कारण पूछा तो उसने कहा साहब को राजयोग सीखना है, स्वयं पर काबू पाने के लिए। हमने उसे उसके नजदीक सेन्टर का पता देकर भेज दिया। दूसरे दिन उस भाई ने मुझे बताया यह स्टेट बैंक की लोकल शाखा के प्रबन्धक है। उसने मुझे सिर्फ इसलिए नौकरी पर रखा है कि जब भी वो घर से निकले, घर आने तक, मेरे साथ रहे, जब भी शराब की तरफ जाऊं तो वो मुझे फोर्स के साथ रोके। उसने कह रखा है कि उस समय मैं उसे थप्पड़ भी मार सकता हूँ। अचानक हमारा वहाँ उसी सेन्टर पर जाना हुआ जिसका पता मैंने उसे दिया था। दो दिन वह कोर्स करने आया परन्तु तीसरे दिन उसकी पत्नी व बच्ची भी आयी वह इतना परेशान थी कि बात मत पूछो। घर पूरा नर्क बना था, कुछ दिन बाद हम वहाँ से वापस आ गये। कुछ दिनों बाद हमने उस भाई से पूछा तो पता चला कि उसने फांसी लगा ली, इसे क्या कहें, बदनशीबी या कुसंग का मायाजाल या नासमझी की सजा। चाहे कुछ भी हो पर एक बार भी इन व्यसनों के चक्रव्यूह में

फंसा तो निकलना नामुमकिन ही है, उसे दुनिया की कोई ताकत नहीं निकाल सकती, जब तक वह स्वय न निकलना चाहे। फांसी सिर्फ उसने लगाई पर बर्बाद तो पूरा परिवार हो गया। नशा व्यक्ति को तो पंगु बनाता ही है बच्चों को गंवार व अनाथ माँ-बाप को बुढ़ापे का दर्द, पत्नी को बेसहारा, बहन को रोने का जरिया दे जाता है। भगवान बचाओ ऐसे काल से!!!

**बचने के उपाय:-** सबसे सरल उपाय माँ-बाप की थोड़ी सी सावधानी, बच्चों की थोड़ी सी समझदारी, समाज की थोड़ी सी जिम्मेदारी, बड़ों की थोड़ी मेहरबानी, सरकार की थोड़ी सी खबरदारी, साथियों की थोड़ी जवाबदारी, शिक्षकों की थोड़ी सी कद्रदानी, अगर हो जाये तो हर व्यसन से बचा जा सकता है।

**(1) माँ-बाप की सावधानी:-** माँ बाप को वह कोई भी काम नहीं करना चाहिए जो बच्चों के लिए हानिकारक हो, और अगर करते हैं तो छोड़ देना चाहिए और फिर भी अगर करते हैं तो बच्चों के सामने न सेवन करें। नशीली चीजों की बातें न करें और बच्चों की एक्टीविटी पर ध्यान देते रहें, बच्चे क्या पढ़ रहे हैं? क्या देख रहे हैं? कहाँ जा रहे हैं? कब सो रहे हैं? क्या सोच रहे हैं? उनके साथ रहें, अगर समय कम दे पायें, तो भी उनके मन के साथ ज्यादा रहे। बच्चे को बचपन में अच्छे संस्कार का बीज डाल दें, बड़े होने पर उन संस्कारों की शीतल व खुशी की छाया में सुखी जीवन बिताये।

**(2) बच्चों की समझदारी:-** कभी भी कोई काम छिप कर नहीं करना चाहिए, नया एक्सपेरिमेन्ट अकेले नहीं करना चाहिए, हमेशा बड़ों की निगरानी में कोई काम करें। माँ-बाप की आज्ञा के बिना कुछ न लें किसी से कुछ नहीं लेना चाहिए, खाने की चीजें तो बिल्कुल नहीं। जिन्दगी को लिफाफा नहीं पोस्टकार्ड बनाईये, खुली किताब बनाइये, जीवन सुन्दर उपवन बन जायेगा जिसके सानिध्य में अनेको को खुशी मिलती रहेगी।

**(3) समाज की जिम्मेवारी:-** कोई व्यसन सार्वजनिक स्थानों पर न करें, अच्छा तो ये होता कि व्यसन करे ही नहीं, पर किसी बच्चे के सामने तो बिल्कुल नहीं, न ही उनके सामने कोई व्यसन की चीज लायें। उन्हें कभी भी नशा करते देख मानवता के नाते ही सही, पर उन्हें नशे से बचाने की पूरी जिम्मेवारी समझें, उनको कभी भी प्रेरित तो बिल्कुल न करें।

**(4) बड़ों की थोड़ी सी मेहरबानी:-** कोई भी घर के बड़े बच्चों के सामने नशा न करें, न तो उनसे कभी नशीली चीजें उठाने, मंगाने के लिए भेजे। बल्कि उनसे हमेशा अच्छी बातें करे, प्रेरक प्रसंग सुनायें, सच्चाई, ईमानदारी, सहयोग की बातें सिखायें। बच्चे का जीवन मूल्यों से सजायें, जीवन मूल्यवान बन जायेगा, तो बच्चे भी आपकी पालना की कीमत चुकायेंगे।

**(5)सरकार की खबरदारी:-** सरकार को चाहिए किसी भी नशे का होर्डिंग, रोड, टीवी, पेपर में ऐड किसी भी मैगजीन में न दें, कोई भी मसाले अथवा नशे की फैक्टरी न लगाने दें, चाहे कितना भी टैक्स सरकार को मिलता हो। एक तरफ बड़े-बड़े होर्डिंग लगाते हैं जर्दा खाने का शाही अन्दाज। फिर कैन्सर के लिए अनुदान इकट्ठा करते हैं। एक अलग से आयोग का गठन करते हैं, फिर हजारों लाखों लोग कैन्सर उन्मूलन में दिनरात  रत रहते हैं। थोड़ी सी खबरदारी सरकार रखे कि कहाँ क्या और कितना खर्च हो रहा है तो सब अपने आप ही ठीक हो जायेगा।

**(6) साथियों की जवाबदारी:-** कई बार साथी खुद भी उल्टे-सुल्टे नशों का सेवन करते हैं और साथियों

को भी उसी चपेट में ले लेते हैं। उसकी जरूरत उसके परिवार में कितनी है, उसका अपना जीवन भी कल कैसा होगा इसका कोई ख्याल नहीं, अपना काम तो मौज मस्ती करना, आग लगे बस्ती में, जीवन चली जाये चाहे सस्ती में। नहीं, हमारी जिम्मेवारी अपने साथियों को भी बुराई से बचाने की है। उसके परिवार को भी अपना परिवार समझ कर उसे भी योग्य व सुखी नागरिक बनाने की जिम्मेवारी हमारा नैतिक फर्ज है। यह बात अगर साथी समझ लें तो कोई भी बुरा नहीं बन सकता क्योंकि हर नशा किसी न किसी के संग से ही शुरु होता है।

**(7) शिक्षकों की कद्रदानी :-** शिक्षक ही एक ऐसा व्यक्ति है जिसका रिगार्ड बच्चा सदा करता है, माँ-बाप का कहना बच्चे नहीं मानते परन्तु टीचर की कोई भी बात को बच्चे कभी नहीं टालते। एक अबोध शिशु उन्हें मिलता है वह उन्हे जैसा चाहे ढाल सकते हैं, एक सुयोग्य नागरिक बनाने के लिए बच्चे की दिशा व दशा उनके हाथ में होती है। पत्थर को तराश कर हीरा बनाया जा सकता है। बच्चों के सामने कोई नशा कम से कम शिक्षक तो नहीं करें और बच्चे को नशा उन्मूलन के लिए बचपन से तैयार करें, नशा हमारा दुश्मन है यह घुट्टी हरेक शिक्षक पिलाने की कद्रदानी कर दे। नरेन्द्र को विवेकानन्द बनाने के लिए रामकृष्ण परमहंस से जैसा गुरु मिला था। शिवाजी भी रामदास जी की मेहनत थे, आज भी इस नशे रूपी सर्वनाश दुश्मन से लड़ने के लिए ऐसे ही शिक्षक चाहिए। अगर समाज के सभी वर्ग अपना-अपना फर्ज निभाये, तो दुश्मन चाहे कैसा भी क्यों न हो पर उस पर जीत प्राप्त करने में समय नहीं लगेगा।

**नशा मुक्ति से लाभ**

कई लोग तीर्थ पर जाते हैं तो अपना कोई न पसन्द वाला फल या ना पसन्द वाली सब्जी दान कर आते हैं। अरे तुम्हारे एक के कोई फल छोड़ने से कौन सा मार्केट में फल सस्ता हो जायेगा या तुम्हारे इष्ट को सब्जी खरीदनी नही पड़ेगी। पर अगर तुम अपना कोई व्यसन छोड़कर आओ तो न सिर्फ भगवान खुश होगा बल्कि परिवार समाज, पड़ोसी और तुम खुद सुखी हो जाओ। तन स्वस्थ, मन शान्त, धन से सम्पन्न बन जाओगे। यह जीवन जो प्रकृति का उपहार, भगवान का वरदान है, मूल्यवान है इसे नष्ट न करें, इससे भारत का भविष्य नव निर्माण करें।

**अनुरोध :-** विशेष हम अपने युवा साथियों से अनुरोध करते हैं कि अगर आप कोई भी व्यसन करते हैं तो आप ब्रह्माकुमारीज के किसी भी सेवाकेन्द्र पर पधारकर व्यसनमुक्त बनने की सहज विधि सीख लें। ईश्वरीय ज्ञान योग का नशा करने से अन्य सभी नशे से स्वत: छूट जायेंगे। कहा जाता है सब नशों में नुकसान है, केवल एक नारायणी नशे के। इसके लिए आपको नि:शुल्क होम्यापैथिक दवाई भी जा जायेगी जो आपको इस आदत से मुक्त करेगी।

# हे नारी ! तुम ऐसी हो

हे भाब्दों की शिल्पकार तुम मूक भला क्यों बनती हो?
समझ न पाये गर ये जमाना, दोशी भला तुम क्यों बनती हो?
इन भाोलों अंगारों की दुनिया में रहकर,
नहीं कोई अग्नि है तुममें समाई,
अगर भावना ज्वार का रूप लेगी,
भला गंगा बन सबकी तपत क्यों बुझाई?
अरे!खौफ मानव से तुमको है कैसा?
रचियता हो इनकी तुम ये क्यों भूल जाती!
नहीं ये विधाता कभी भी तुम्हारे,
नहीं रचना में वो दम करे जो तिरस्कृत,
असुर, सुर विजेता डरें क्यों किसी से?
फिर इन चिन्गारियों से क्यों भयभीत होना,
उठ कर खड़े हो निर्भीक होकर
नहीं रोक पायेगा कभी तुमको जमाना,
दायरों को मोडने की भाक्ति है तुममें,
हर बंधनों को खोलने की युक्ति है तुममें,
लक्ष्मीबाई, रजिया को कौन रोक पाया था,
दुर्गा, काली को कौन रोक पायेगा?
गोविंद सिंह, शिवाजी, शंकर की रचयिता,
नहीं अबला कहीं भी,सर्व का संबल बनने वाली,
हिला दे जो गिरि को, झुका दे जो नभ को,
तुम अजेय भाक्ति प्रचंड, क्यों पत्थरों से डरने वाली,
कहीं कोई भाक्ति का याचक बनेगा,
कहीं कोई भक्त उपासक बनेगा,
तू अपनी उर्जा को खुद मान ले गर,
नहीं कोई तेरा फिर अराजक बनेगा,
ई वर ने अपनी भाक्ति तेरे उर में समाई,
धरा सम धीरज सहन भाक्ति समाई,
फिर तेरी गरिमा पर कैसे आंच आई?
नहीं भेंड़ बकरी हो तुम, शेर को वश में करने वाली,
इंसान तो क्या भगवान को भी मदद देने वाली,
हे नारी! तुम दाता हो, नहीं फरियादी बनने वाली,
क्या सबकी तुम दया पात्र हो? या हो दया लुटाने वाली?

ओम भाान्ति

# आभार एवं शुभेच्छा

आज तलक तो शाम अवध की, रही बहुत मशहूर,
पर मधुबन की आज शाम ने, किया उसे बेनूर,
ऑडिट के सूखे मौसम में, दिन बसंत का आया,
फाइनल सबको मिला रजिस्टर, हर चेहरा मुस्काया,
झूम उठा हर मन मयूर,नैन खुशी–2 भर आये,
ऐसे लम्हों के लिए वाजिब अल्फाज़, नहीं मिल पाये,
मधुबन का अन्दाज नया ये, हम सबको बहुत ही भाया,
हर ऑडिटर की देख के सेवा, सिर श्रृद्धा से झुक आया,
मधुवन के हर विभाग ने,अति उत्तम प्रबन्ध कराया,
नहीं कामना अब कुछ खाने की, इतना कुछ खिलाया,
नित नये व्यंजन बनाकर, बड़े प्यार से खिलाते,
चाहे हो तन्दूरी रोटी,चाहे पावभाजी या आइसक्रीम,
दिल को छूने वाला निमन्त्रण, ज्ञान सरोवर का आया,
दीदी निर्मला के निर्मल प्यार संग,सबने ब्रह्माभोजन खाया,
मधुबन के होलीहंसों को,हम सबका दिल से बहुत–2 धन्यवाद,
मधुवन के ये सात दिन,सारे साल आते रहेंगे याद,
कहीं एक दिन कलम विधाता, की हमको मिल जाये,
नैया सबकी पार लगा दूँ, बस आश ये पूरी हो जाये,
सबसे पहले सन् 36 का, समय वापस ले आते,
भट्ठी वाले साल वो 14, सबके लिए ले आते
हॅसते गाते मौज मनाते,सदा बाबा के संग रहते,
जी भर करके मिलते बाबा से, दिल भरके सबको मिलवाते,
मन से सबके ईर्ष्या मिटाते, प्रेम का पाठ पढ़ाते,
नहीं विकारों को धरती पर, कहीं पे टिकने देते,
धर्मराज को धरती पर, ऊपर से बुलवाते,
कर्म करना यहॉ कितना मुश्किल,ये उनको समझाते,
गवर्मेन्ट की तरह अब तक का, सिर से बोझ हटवाते,
श्रेष्ठ कर्म की कला सिखाकर, भाग्य सभी का जगाते,
मम्मा, दीदी, दादी, संजय, सबको वापस करवाते,
गॉधी जी को रामराज्य का,मॉडल यहीं दिखलाते,
US. UK. मधुवन, लखनऊ, पास–2 ले आते,
परमधाम नीचे ला करके, सबका योग सहज करवाते,
दादी जैसा उर्जावान बन,सबकी उर्जा खूब बढ़ाते,
बाबा के हर बच्चे का मन, उत्साह से फुल कर देते,
पंख लगाकर सबको मधुवन, हर दिन फ्री पहुॅचाते,
ड्रामा का हर पाठ सभी को, एक्यूरेट पढ़ाते,
बाबा, मधुवन, दादी आपका, सबको बहुत मिला है प्यार,
नहीं भुलाये भी भूलेगा, ये सेवा वा सत्कार,
दिल से दादी और सभी का, बहुत–2 आभार ।

ओमशान्ति

# जीवन कैसे जीना चाहिए

1- जीवन जीना चाहिए स्वमान के नशे से, शान्ति से आनन्द पूर्वक, सुखी, खुशहाल, मजे से एवं अर्थ पूर्ण, उद्देश्यपूर्ण, निर्मल, निर्लिप्त, कमल सम पवित्र, कर्मयोगी, सिद्धान्त युक्त, कायदे प्रमाण, रॉयल, उमंग-उत्साह से लवरेज, सफल, स्नेह, सिक्त, बड़ी दिल से, बेदाग, निर्विकारी, निष्कामी, स्वस्थ, दुआओं एवं गुणों से सम्पन्न, मधुरतम् शक्तिशाली, उपराम, वैराग्य वृत्तिवाला, त्यागी तपस्वी, इनोसेन्ट, सादगी सम्पन्न, सात्विक, सदाचारी, श्रेष्ठ, सम्माननीय, परोपकारी, उदार, सुन्दर, मितव्ययी जीवन जीना चाहिए परन्तु हम समझते हैं इसके लिए चाहिए – त्याग-तप- निश्चय ब्रह्मा बाप का, आज्ञाकारिता एवं निर्मानता मम्मा की, सत्यत–पवित्रता-पालना बड़ी दादी की, अनासक्त, वैराग्य, ज्ञान का चिंतन, दादी जानकी का, मैनेजमेन्ट की कुशलता बड़ी दीदी की समर्पणमयता बृजेन्द्रा दादी की, साधना आलराउण्डर दादी की, त्याग सन्तरी दादी का, निरसंकल्पता एवं रूहानियत गुल्जार दादी की, निर्मलता एवं सौम्यता निर्मलशान्ता दादी की, निर्भयता एवं निडरता दादी चन्द्रमणी की, स्नेह सती दादी का, एक्टीवनेस एण्ड एलर्टनेस रतनमोहिनी दादी, ईमानदारी ईशू दादी की, माधूर्य मिट्ठू दादी का, स्वच्छता भूरी दादी की, उदारता भोली दादी की, चात्रकता कुंज दादी की, प्रभु प्रेम गंगे दादी का, कर्तव्य निष्ठा हृदय पुष्पा दादी की, परखशक्ति सीतू दादी की, शान्ति शान्तामणि दादी की, रमणीकता मनोहर दादी की, सरलता सन्देशी दादी की, हृदय किशनी दादी का, हाँ जी विश्व रतन दादा का, सेवा भावना भाऊ किशोर की, सामायिकता आनन्द किशोर दादा की, विवेक, एकाग्रता ज्ञान का स्पष्टीकरण जगदीश भाई का, मुस्कान एवं चाल निर्वैर भाई की, समझदारी एवं गहराई रमेश शाह भाई की, लाइटनेस बृजमोहन भाई की, रमेश भाई (लिट्रेचर) की निश्चिंतता, राजू भाई की समभाव, अनुशासन एवं प्रशासन, आशा दीदी का, भोलापन कैलाश बहन जैसा, निश्छलता चक्रधारी दीदी जैसी, दिव्यता एवं विमलता जयन्ती बहन का, कायदे-कानून निर्मला दीदी जैसे, पुरुषार्थ मोहिनी बहन (न्यूयार्क) का हो तो यह जीवन ऐसा बन सकता है जिससे अपने साथ सारे जग का भला होगा और नाज होगा बाबा को और हमारे टीचर एवं समस्त ब्राह्मण परिवार को और सहज ही सभी से सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट मिल जायेगा, खुश रहेगा और सदा सभी को खुशी बांटेगा, सदा शान्त-शान्त-शीतल-सुखी रहेगा और सबको सुखी करेगा ऐसा जीवन जो बाप की पहचान अपने चेहरे-चाल-चलन-चरित्र से कराये। ऐसा जीवन जीना चाहिए, साथ-साथ इसमें अगर ये एड कर दिया जाये तो फिर सोने पे सुहागा हो जायेगा।

अर्जुन की एकाग्रता, शुकदेव की इनोसेन्सी, हरिश्चन्द्र की सत्यता, मर्यादा पुरुषोत्तम राम की, अनासक्त राजा जनक की, तप विश्वामित्र का, प्रतिज्ञा राजा रघु की, सम्बन्ध प्रभु से मीरा का, वैराग्य बन्दा वैरागी का, सरलता बच्चे की, दिल हनुमान का, शरीर का सदुपयोग दधीचि सम, निर्लिप्तता कमल की, न्यारापन चन्दन के पेड़ का, निर्भयता शेर की, भुजायें दाता की, नयनशीतला देवी के, वाणी सरस्वती की, दृढ़ता पपीहे की, प्रेम भौरे का, पसंद के साथ लोक पसंद भी होगा ऐसे गुणों से सम्पन्न सुसंस्कारी जीवन जीना चाहिए व ऐसी ही जीवन बनाने की हमारी प्रथम व अन्तिम इच्छा व दिल की हर ख्वाहिस यही पर खत्म होगी। ओमशान्ति।

**– सुमन बहन, लखनऊ यूपी**

# मरना कैसे चाहिए?

1- मरना जीते जी अच्छा है, क्योंकि इसमें तो मरने के बाद भी कमाई होती रहती है। लोग तो कहते हैं बिना मरे स्वर्ग नहीं जायेंगे पर वहाँ कोई जाता नहीं, पर जीते जी मरने पर स्वर्ग जाना क्या बड़ी बात स्वर्ग के मालिक ही बन जाते हैं। जीते जी मरने के बाद जब प्राण तन से निकलते हैं तो प्राय: यह और हो जाता है तो बहुत ही अच्छा कि फिर कोई पुरानी बात याद न आये नहीं तो जैसे कई लोग मर-मर कर जीते हैं या जिन्दा होते हुए भी मुर्दे की तरह पड़े रहते हैं, उनकी मौत सारे सम्बन्धि बुलाते रहते हैं फिर भी वह नहीं आती है और आती भी है तो लोगों को खुशी होती है पर उसको खाली हाथ जाना पड़ता है क्योंकि लम्बे समय की शारीरिक भोगना मन को दुखी, चिन्तन को निरोधी, भावना कलुषित बना देती है जसिसे अन्त मती अच्छी नहीं होती। पर लोगों को सुकून मिलता है।

2- दूसरा मरना मैं-पन से अच्छा, जिससे सबको सुख व खुशी दे सकते, जिसके कारण दुआओं के पात्र बनते और खुद की शान्त चित्त व खुश रह सकेंगे। ऐसा मरना आज के संसार की परम आवश्यकता है, सारा झगड़ा इसी बात के कारण होता है। हम समझते हैं यह मरना बहुत ही अच्छा है पर यह मरना आज कल बड़ा मुश्किल लगता है।

3- तीसरा मरना जो बाबा कहते हैं ज्ञानामृत मुख में हो, भगवान का दर हो, परमात्मा स्मृति में हो तब प्राण तन से निकले। यह मरना भी बहुत अच्छा होगा। अन्त अच्छा तो सब अच्छा।

4- चौथी प्रकार का मरना जब लक्ष्य पूर्ण हो गया हो, जीवन में सन्तुष्टता आ गयी हो, सम्बन्ध मधुर हो, सभी लोग सन्तुष्ट हो, सबकी दुआयें साथ हो, शरीर की भोगना न हो, जीवन पूरा जी लिया हो, अच्छी कमाई जमा हो और सहज शरीर से प्राण तन से निकले। यह मरना भी अच्छा।

5- पांचवी मौत हृदयघात की मौत अच्छी वह भी अगर साइलेन्ट अटैक हो तो बहुत अच्छा। जिसमें न कोई मरने का भय न भविष्य की चिंता, न शरीर की भोगना न पैसे की बर्बादी, न सम्बन्धियों से सेवा लेने की चिन्ता, न तो दवाइयों को खाने का दुख। यह मौत भी अच्छी है।